HALF-AN-HOUR DISCUSSION— *Contd.*

Points arising out of Answer given in the Rajya Sabha on 2nd May, 2005 to Starred Question on No. 524 regarding 'Promotion of Urdu Language in Bihar'

श्री एस॰एम॰ लालजन बाशा (आन्ध्र प्रदेश): उपसभापति जी, बहुत ही अफसोस है कि आजादी मिलने के 57 वर्षों के बाद आज उर्दू की बात को फिर से दोहराना पड़ रहा है। यह बहुत ही अफसोसजनक बात है। आज हिन्दुस्तान में एक गलतफहमी लोगों में है कि उर्दू जबान सिर्फ मुसलमानों की जबान है, जबकि उर्दू जबान हिन्दुस्तानी जबान है, हिन्दुस्तान का हरेक बाशिंदा यह प्यारी जबान बोलकर बहुत खुश होता है। एक मिसाल के तौर पर हमारे देश के प्राइम मिनिस्टर, श्री पी॰वी॰ नरसिम्हाराव साहब ने उस्मानिया यूनिवर्सिटी से उर्दू में डिग्री ली थी। उन्होंने उर्दू में डिग्री ली थी और मैं आंध्र प्रदेश में ऐसे सौइयों नॉन मुस्लिम लोग बता सकता हूं, जिन्होंने उर्दू में डिग्री ली है। आज यहां हुकूमतों की नीयत, स्टेट गवर्नमेंट्स की नीयत साफ रखनी है, इसलिए इसे वोट बैंक की नजर से न देखते हुए, मैं आंध्र प्रदेश में यह फख्र से बोल सकता हूं कि चंद्र बाबू नायडू ने उर्दू को सैकिण्ड लैंग्वेज बनाया है। उन्होंने चौदह डिस्ट्रिक्ट्स में, जहां दस परसेंट मुसलमान हैं, वहां सैकिण्ड लैंग्वेज बनाने का काम किया है। आजादी के बाद, उर्दू अकादमी का जो लाखों का बजट था, वह करोड़ों में देने का काम किया है। हिंदुस्तान में सही काम करने की नजर, एक अच्छी सोच होनी वाकई जरूरी है। क्योंकि आजादी के बाद इस देश में सबसे ज्यादा कांग्रेस की हुकूमत रही है, लेकिन सिर्फ बातों में इतने साल गुजर गए हैं। जितना काम करना था, वह कुछ भी नहीं हुआ है। आज इस बात की यहां फिर शुरूआत हुई है। आज सेंट्रल गवर्नमेंट में यू॰पी॰ए॰ की सरकार बैठी है, यह मुसलमानों का वोट बैंक लेकर यहां हुकूमत में आई है। अभी तक सही मायनों में अच्छी सोच से, क्योंकि बजट हरेक स्टेट के लिए होता है, जो बजट आज है, उसे बढ़ाने की यहां से डायरेक्शन की बात भी होती है, अभी सेंट्रल गवर्नमेंट में चिदम्बरम् जी अपनी बजट स्पीच में बोल रहे थे कि हम लोग उर्दू के लिए कुछ कर रहे हैं, उर्दू टीचर्स के लिए कुछ कर रहे हैं, लेकिन सिर्फ कागजों और बातों में सालों साल गुजरते हैं, हकीकत में सही नहीं होता है। आज हमारे नेशनल माइनोरिटी कमीशन के चेयरमैन और मैम्बर ने ऑथेंटिक बात कही है। सरकार जी ने वाकई में सही बात यहां रखी है कि आज भी पंजाब में तकरीबन सभी लोग उर्दू ही पढ़ेंगे, हिन्दुस्तान में उर्दू पेपर वहीं पर सबसे ज्यादा है, यह सही है, लेकिन हम यहां देखते हैं कि लोगों में उर्दू के लिए एक ऐसा माहौल और गलतफहमी बन गई है कि यह सिर्फ मुसलमानों की लैंग्वेज है। यह मुसलमानों की लैंग्वेज नहीं है, यह एक प्यारी जबान है। इसे एक अच्छे तरीके से लाना है। हमारी सोच में एक अच्छी सोच भी लानी है। चंद्रबाबू नायडू से पूर्व हमारे चेन्ना रेड्डी साहब थे, वे आज नहीं हैं, वे गुजर गए हैं, वे हरेक मीटिंग में उर्दू को सैकिण्ड लैंग्वेज बनाने की आवाज उठाते थे, लेकिन जब वे हुकूमत में आ गए तो हुकूमत में आने के बाद उर्दू के बारे में ही भूल गए। उर्दू के लिए हम लोग जिन्दा हैं, उर्दू के लिए आज हम

लोग यहां बैठे हैं, उर्दू के लिए हम लोग कुछ कर रहे हैं, सिर्फ बातों से यह नहीं होगा। श्री चंद्रबाबू नायडू का आन्ध्र प्रदेश के बारे में एक्जौम्पल लेकर तथा वहां देखें कि हमने उर्दू के लिए क्या किया है। वहां उर्दू यूनिवर्सिटी के लिए 200 एकड़ जमीन दी है क्योंकि उर्दू यूनिवर्सिटी को डवलप करने का यह हमारा ख्याल था। हमने उसके लिए जमीन दी और उर्दू के लिए हम लोगों ने जितना काम किया है, अभी हमारे सिद्दिकी साहब ने बताया है कि उर्दू चैनल – ई॰टी॰वी॰ हमारे आंन्ध्र प्रदेश से शुरू हुआ है। तो आज उर्दू न्यूज चैनल आन्ध्र प्रदेश से शुरू हुआ।

श्री शाहिद सिद्दिकी: अब इनसे भी मांग करो कि ये यहां भी करें।

†[شری شاہد صدیقی : اب ان سے بھی مانگ کرو کہ یہ یہاں بھی کریں۔]

श्री एस॰एम॰ लालजन बाशा: तो हमारा वहां का एक्जौम्पल लेकर देश में उर्दू को इस तरह से बढ़ाए। श्री चन्द्रबाबू नायडु ने क्या किया है, वह देखो तथा देखकर उसको इम्प्लीमेंटेशन में लेकर आओ आज यहां पौलिटिक्स नहीं है लेकिन जो काम किया है। उसको लोग याद रखेंगे। आज वहां चन्द्रबाबू नायडु हैं या नहीं हैं, कल आएंगे, वह दूसरी बात है, तो आज हमें नीयत साफ रखनी है। सिर्फ वोट बैंक के लिए, वोट बटोरने के लिए हम लोग यहां बैठे हैं, इससे ज्यादा दिन लोगों को आप गुमराह नहीं कर सकते। आज सही मायने में उर्दू के लिए कुछ भी करना है। उर्दू हिन्दुस्तानी जुबान है, यह मुसलमानों की जुबान नहीं है पहले यह चीज जहन से निकालनी है। हम सब लोगों को पार्टी से हटकर, पार्टी से उभरकर कुछ करना है। आज यहां बिहार के मामले में बोलने की शुरूआत हुई है। बिहार के ही मंत्री जी यहां बैठे हैं। हम इनसे उम्मीद रखेंगे कि वे जरूर कुछ न कुछ इसमें जान लेकर आएंगे। आज अच्छा काम फातमी साहब की मिनिस्ट्री से शुरू हुआ है, क्योंकि एच॰आर॰डी॰ मिनिस्टर बिहार से हैं और यह डिसकसन भी आज बिहार से ही शुरू हुआ है। इसलिए मैं फिर एक बार मंत्री जी को बोल रहा हूं कि आज कुछ मुद्दे ऐसे एनाउंस कीजिए कि सेंट्रल गवर्नमेंट से पांच सौ करोड़ का फंड उर्दू को सैंक्शन करने की मांग है, उसके बारे में एक अच्छा फिगर बताकर हम लोगों को खुश करें। इन सब बातों के साथ मैं समाप्त करता हूं।

प्रो॰ सैफुद्दीन सोज (जम्मू और कश्मीर): जनाबेआला, उर्दू की बड़ी शान है और मैं भी गुस्ताखी करूंगा कि मैं उर्दू में कुछ बोलूंगा। उर्दू के साथ बड़ी ज्यादती हुई है और यह नाइंसाफी जनाबेआला, जारी है। तो आखिर पर मैं कोई शेर नहीं बताऊंगा, लेकिन इस वक्त शुरू में बताऊंगा, तर्जुमा नहीं करूंगा। वह है:

"फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर,
मरदे नादां पर कलामे नरमो नाजुक बे-असर।"

†Transliteration in Urdu Script.

7.00 P.M.

उर्दू इस मुल्क की वह जुबान है, गंगा जमनी तहजीब की जुबान और हिन्दू और मुसलमानों के मुशतरका कल्चर की तर्जुमान जुबान। उसके लिए आज शाम यहां शौक में मिले हैं वरना माहौल ऐसा है जैसे कि मुतास्सिर न करने वाला कोई प्राइवेट मेंबर बिल हो जिसके लिए कोरम तलाश करना पड़ता है। इसलिए मैं जो कुछ बातें बताऊंगा आखिर में जो तजवीज करूंगा वह वजीरे आजम के लिए है। बहुत जमाना हो गया है और उर्दू की नाइंसाफी जो है, वह जारी है, इसलिए कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे लगे कि मौजूदा हुकूमत ने जो वायदा किया है वह पूरा कर रही है। जनाबेआला, जो उर्दू जुबान है, सबसे पहले जो 6 सूबे हैं उनमें यह जूबान बड़ी अक्सीरियत, बहुत बड़ी आबादी की जुबान है। इसलिए इन सूबों में जिसमें बिहार पहले आता है — बिहार है, उत्तर प्रदेश है, देहली है, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्रा और जम्मू कश्मीर। जम्मू कश्मीर में तो उर्दू सरकारी जुबान है, लेकिन बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, कर्नाटक, आन्ध्र में क्या पॉलिसी है वह तो अभी मिनिस्टर साहब बताएंगे। एक कुलिया तय हो गया था कि जहां 10 फीसदी बच्चे स्कूल में है, उनको आप टीचर्स फरहाम कीजिए और वे टीचर्स फरहाम नहीं कर सके, न बिहार में है, न उत्तर प्रदेश में है, मैं शायद सिद्दिकी साहब से माजरत करता हूं। कर्नाटक में इसका इन्तजाम होना चाहिए, दिल्ली में होना चाहिए, महाराष्ट्र और आन्ध्र प्रदेश में होना चाहिए। यह एक उसूल तय हो गया है और यह नहीं होता है। इसके अलावा जहां-जहां उर्दू वाले बच्चे हैं, स्कूल में 10 बच्चे हैं, तो उनके लिए टीचर होना चाहिए। लेकिन जब आप 10 फीसदी बच्चों के लिए इन्तजाम नहीं कर पा रहे हैं तो 10 बच्चों का क्या करेंगे? इसलिए जो बात तय हो गयी है, उसूल पर खरी उतर आई है, वह कीजिए। तब हम मानेंगे कि उर्दू के लिए कुछ हो रहा है।

अब कुछ रियासतों ने कहा कि उर्दू दूसरी सरकारी जुबान होगी, लेकिन काम के एतबार से कुछ नहीं किया, न बिहार में हुआ। अभी आप कहते हैं कि तख्ती लगाइए, रेल के लिए या बस के लिए, आप तख्ती पर उर्दू भी लिखिए। यह तख्ती पर लिखना मुराआत की फेहरिस्त में दर्ज करेंगे। पर उर्दू वाले हैं, वे अनपढ़ों की तरह चलते हैं और आगे उर्दू की तख्ती नहीं है। मुझे इस पर बड़ा अफसोस आता है, इसलिए कि यह दूसरी सरकारी जुबान है। दिल्ली में है, तो क्या है, यूपी में है तो, इसका क्या है, उर्दू के फरोग के लिए क्या मुराआत हैं? मौजूदा सरकार में हमने वादा किया है, सीएमपी में हमने वादा किया है, उर्दू को उस फेहरिस्त में शामिल किया गया है कि उर्दू के मुस्तकबिल को संवारा जाएगा तो आप बताइए कि जब इस मुल्क में, कई रियासतों में यह दूसरी जुबान है, तो क्या है, इन रियासतों में क्या किया गया है?

जनाबे आला, हमारे पास एक दस्तावेज है। मुझे अफसोस है कि जब गुजराल साहब वजीरे आजम हो गए, मुझ जैसे लोगों ने उनको याद दिलाया और उन्होंने शायद खुद भी कोशिश की होगी, गुजराल कमेटी रिपोर्ट और इस मुल्क का वजीरे आजम गुजराल साहब और हम कैबिनेट में और

वह रिपोर्ट जो है, गर्द चाट रही है। इससे बड़ा जुल्म क्या होगा इस मुल्क में। ...(व्यवधान) मैं था और मैंने कोशिश की, उसी चीज के लिए कोशिश नहीं की, मैं यह कहता हूं कि वह समाज पर एक कलंक का टीका है कि गुजराल साहब एक कमेटी के चेयरमैन हैं और वह बाद में वजीरे आजम हो जाते हैं, लेकिन उर्दू का कुछ नहीं होता। वह रिपोर्ट अभी है।

मैं शाहिद साहब से यह कहना चाहता हूं कि जो उर्दू यूनिवर्सिटी यूपी में बनने जा रही है, मुझे उसे सिर्फ रेकार्ड पर लाना है, उससे मुसलमानों को खास कर, वह दर परदा तो मुसलमानों के लिए किया जा रहा है, लेकिन उनको कोई फायदा नहीं आएगा...(व्यवधान)...नहीं, मैं आता हूं। अभी ...(व्यवधान)...आपने तो यह कहा कि यह मुसलमानों की जुबान नहीं है, मैं यह कहता हूं कि यह सर्फ मुसलमानों की जुबान नहीं है...(व्यवधान)...मैं उस पर आऊँगा...(व्यवधान)... मैं कहता हूं ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: नहीं, देखिए। ...(व्यवधान)...अभी बहुत से मैम्बर्स को इसमें हिस्सा लेना है, इसलिए आप वक्त का ख्याल रखिए।

प्रो० सैफुद्दीन सोज: मुख्तसर। मैं इसलिए कहता हूं शाहिद साहब, मुझे उसमें कोई जिद नहीं है, मगर मैं यह समझता हूं कि हैदराबाद में जो यूनिवर्सिटी है और यह यूनिवर्सिटी कायम करने वाले हैं, इसे मेरी नजर में क्योंकि इस पर कोई बहस नहीं हुई है, उर्दू के फरोग के लिए कोई फायदा नहीं होगा। जब मैं मुसलमान की बात करता हूं...(व्यवधान)... सुनिए ना ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: सिद्दिकी साहब, ये उनके विचार हैं।

प्रो० सैफुद्दीन सोज: मैं यह कहता हूं जनाबे आला, मैं क्यों कह रहा हूं ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: नहीं, आप उनका नाम नहीं लीजिए।

प्रो० सैफुद्दीन सोज: मैं एक तरफ उर्दू यूनिवर्सिटी का नाम देखता हूं, तो दूसरी तरफ देखता हूं कि 11 करोड़ के बजट से उर्दू के फरोग के लिए जो काउंसिल है, उसने कितना उम्दा काम किया है। अगर हम गवर्नमेंट से यह मुताल्बा करते हैं कि 5 गुना वह ग्रांट बढ़ाइए, तो मुझे नजर आता है कि मदरसों का माडर्नाइजेशन होगा, कम्प्यूटर होगा और उर्दू कम्प्यूटर का इस मुल्क में फैलाव होगा और उर्दू जुबान की खिदमत होगी। यह अफसोस की बात है कि उर्दू काउंसिल के पास 11 करोड़ का बजट है और उनका काम जो है वह शानदार रूप में लिखे जाने के लायक है। (समय की घंटी)

जहां तक यह है कि यह मुसलमानों की जुबान नहीं है, यह मुसलमानों की जुबान है, मगर सिर्फ मुसलमानों की जुबान नहीं है। इसलिए मैं याद दिला रहा हूं कि चिकबस्त को याद करो, त्रिलोक चन्द महरूम को याद करो, रत्न नाथ सरसार को याद करो, किशन चन्द्र को याद करो, रघुपति सहाय गोरखपुरी को याद करो, जिसने कहा कि हिन्दी, जो असली हिन्दी है, संस्क्रीटाइज्ड हिन्दी

नहीं, जो हिन्दुस्तानी है बोलने वाली, उसके 95 फीसदी अलफाज जो हैं, वे उर्दू हैं। आनन्द नारायण राय मुल्ला को याद करो, गोपीचंद नारंग को याद करो और मैं इस सदन को याद दिलाता हूं कि जब महात्मा गांधी ने आजादी की लड़ाई में उर्दू के जज्बात अंग्रेज नारे सुने तो उन्होंने अपने साथियों से, मौलाना आजाद और दूसरे लोगों से उर्दू सीखना शुरू किया। गांधी जी पर आज़ादी की लड़ाई में उर्दू का इतना असर था। असल में जनाब-ए-आला, उर्दू जिंदा है तो उर्दू की दाखिली कुव्वत से। फिल्मी दुनिया में उर्दू ने अपना लोहा मनवाया है। अभी पंजाब के मेरे भाई बात कर रहे थे "हिंद समाचार", "मिलाप" और दूसरे अखबारों की, लेकिन पंजाब की सरकार कुछ नहीं करती बल्कि ताज्जुब की बात है और खुशी की बात है कि जिन लोगों ने पहले स्कूलों में उर्दू पढ़ी, आज वे अपने घरों में अपने बच्चों को उर्दू पढ़ाते हैं और कहते हैं कि यह बड़ी मीठी जुबान है। मैं पंजाब के लोगों को मुबारकबाद देता हूं।

श्री उपसभापति: सोज साहब, अब खत्म कीजिए।

प्रो॰ सैफुद्दीन सोज: तो जनाब-ए-आला मैं आपकी वसातत से एक दरख्वास्त करता हूं वजीरे आजम की खिदमत में, खत भी लिखूंगा और शायद हम सब को खत लिखना चाहिए कि वह दानिशवरों को, उर्दू की शिनास रखने वालों को, उर्दू के फरोग की बात समझने वालों को बुलाएं, एक कमेटी तशकील दें और एक संजीदा गौर व फिक्र हो कि इस मुल्क में उर्दू का मुस्तकबिल कैसे संवारा जाए। ये हमारे भाई जवाब दे देंगे। लेकिन इनकी अपनी दिक्कतें हैं। तो मैं आपके माध्यम से दरख्वास्त करूंगा और इनकी वसातत से दरख्वास्त करता हूं कि इनको वजीरे आजम तक यह बात पहुंचानी चाहिए कि वह हम सब को और बाहर जो दानिशवर हैं, जो उर्दू जानते हैं, उनको बुलाएं और एक बड़ी लंबी बहस हो वजीरे आजम के साथ कि उर्दू का मुस्तकबिल कैसे संवारा जाए। बहुत-बहुत शुक्रिया।

†[پروفیسر سیف الدین سوز ''جموں وکشمیر'': جناب عالی، اردو کی بڑی شان ہے اور میں بھی گستاخی کروں گا کہ میں اردو میں کچھ بولوں گا۔ اردو کے ساتھ بڑی زیادتی ہوئی ہے اور یہ ناانصافی جناب عالی جاری ہے۔ تو آخر پر میں کوئی شعر نہیں بتاؤں گا، لیکن اس وقت شروع میں بتاؤں گا، ترجمہ نہیں کروں گا۔ وہ ہے۔

پھول کی پتی سے کٹ سکتا ہے ہیرا کا جگر
مردِ ناداں پر کلام نرم و نازک بے اثر

†Transliteration in Urdu Script.

اردو اس ملک کی وہ زبان ہے، گنگا جمنی تہذیب کی زبان اور ہندو اور مسلمانوں کے مشترکہ کلچر کی ترجمان زبان۔ اس کے لئے آج شام ہم یہاں شوق سے ملے ہیں ورنہ ماحول ایسا ہے جیسا کہ متاثر نہ

کرنے والا کوئی پرائیویٹ ممبر بل ہو جس کے لئے کورم تلاش کرنا پڑتا ہے۔ اسی لئے میں جو کچھ باتیں بتاؤں گا آخر میں جو تجویز کروں گا، وہ وزیر اعظم کے لئے ہے۔ بہت زمانہ ہوگیا اور اردو کی ناانصافی جو ہے

وہ جاری ہے۔ اس لئے کچھ ایسا کرنا چاہئے جس سے لگے کہ موجودہ حکومت نے جو وعدہ کیا ہے وہ پورا کر رہی ہے۔ جناب عالی جو اردو زبان ہے، سب سے پہلے جو ٦ صوبے ہیں ان میں یہ زبان بڑی اکثریت،

بہت بڑی آبادی کی زبان ہے۔ اس لئے ان صوبوں میں جس میں بہار پہلے آتا ہے، بہار ہے، اترپردیش ہے، دہلی ہے، مہاراشٹر، کرناٹک، آندھرا پردیش اور جموں وکشمیر۔ جموں وکشمیر میں تو اردو سرکاری زبان

ہے، لیکن بہار، اترپردیش، دہلی، کرناٹک، آندھرا پردیش میں کیا پالیسی ہے؟ وہ تو ابھی منسٹر صاحب بتائیں گے۔ ایک کلیہ طے ہوگیا تھا کہ جہاں ١٠ فیصدی بچے اسکول میں ہیں ان کو آپ ٹیچرس فراہم کیجیے

لیکن وہ ٹیچرس فراہم نہ کر سکے۔ نہ بہار میں ہیں، نہ اترپردیش میں ہیں، میں شاہد صدیقی صاحب سے معذرت کرتا ہوں کہ کرناٹک میں اس کا انتظام ہونا چاہئے دہلی میں ہونا چاہئے مہاراشٹر میں اور آندھرا

میں ہونا چاہئے۔ یہ ایک اصول طے ہوگیا ہے اور یہ نہیں ہوتا ہے۔ اس کے علاوہ جہاں جہاں اردو والے بچے ہیں، اسکول میں ١٠ بچے ہیں، تو ان کے لئے ٹیچر ہونا چاہئے۔ لیکن جب آپ ١٠ فیصدی بچوں کے لئے انتظام نہیں کر پا رہے ہیں تو ١٠ بچوں کا کیا کریں گے؟ اس لئے جو بات طے ہوگئی ہے، اصول پر کھری

اتر آئی ہے، وہ کیجئے۔ تب ہم مانیں گے کہ اردو کے لئے کچھ ہو رہا ہے۔ اب کچھ ریاستوں نے کہا کہ اردو دوسری سرکاری زبان ہوگی، لیکن کام کے اعتبار سے کچھ نہیں کیا، نہ بہار میں ہوا۔ ابھی آپ کہتے ہیں

کہ تختی لگائیے، ریل کے لئے یا بس کے لئے، آپ تختی پر اردو بھی لکھیے۔ یہ تختی پر لکھنا مراعات کی فہرست میں درج کریں گے۔ پر اردو والے ہیں، وہ ان پڑھوں کی طرح چلتے ہیں اور آگے اردو کی تختی نہیں ہے۔

مجھے اس پر بڑا افسوس آتا ہے، اس لئے کہ یہ دوسری سرکاری زبان ہے۔ دہلی میں ہے، تو کیا ہے، یو. پی. میں ہے تو اس کا کیا ہے اردو کے فروغ کے لئے کیا مراعات ہیں؟ موجودہ سرکار میں ہم نے وعدہ کیا ہے، سی. ایم. پی. میں ہم نے وعدہ کیا ہے، اردو کو اس فہرست میں شامل کیا گیا ہے کہ اردو کے مستقبل کو سنوارا جائے گا تو آپ بتائیے کہ جب اس ملک میں، کئی ریاستوں میں دوسری زبان ہے، تو کیا ہے، ان ریاستوں میں کیا کیا گیا ہے؟

جناب عالی، ہمارے پاس ایک دستاویز ہے۔ مجھے افسوس ہے کہ جب گجرال صاحب وزیر اعظم ہو گئے، مجھ جیسے لوگوں نے ان کو یاد دلایا اور انہوں نے شاید خود بھی کوشش کی ہو گی۔ گجرال کمیٹی رپورٹ اور اس ملک کا وزیر اعظم گجرال صاحب اور ہم کیبنیٹ میں اور وہ رپورٹ جو ہے، گرد چاٹ رہی ہے۔ اس سے بڑا ظلم کیا ہوگا اس ملک میں۔ ....مداخلت.... میں تھا اور میں نے کوشش کی، اسی چیز کے لئے کوشش نہیں کی، میں یہ کہتا ہوں کہ یہ سماج پر ایک کلنک کا ٹیکہ ہے کہ گجرال صاحب ایک کمیٹی کے چیئرمین ہیں اور وہ بعد میں وزیر اعظم ہو جاتے ہیں، لیکن اردو کا کچھ نہیں ہوتا۔ یہ رپورٹ ابھی ہے۔

میں شاہد صاحب سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ جو اردو یونیورسٹی یو. پی. میں بننے جا رہی ہے، مجھے اسے صرف ریکارڈ پر لانا ہے، اس سے مسلمانوں کو خاص کر، وہ در پردہ تو مسلمانوں کے لئے کیا جا رہا ہے، لیکن ان کو کوئی فائدہ نہیں آئے گا....مداخلت.... نہیں، میں آتا ہوں ابھی....مداخلت.....آپ نے تو یہ کہا کہ یہ مسلمانوں کی زبان نہیں ہے، میں کہتا ہوں کہ یہ صرف مسلمانوں کی زبان نہیں ہے.....مداخلت......میں اس پر آؤں گا.....مداخلت.....میں کہتا ہوں۔.....مداخلت......

شری اُپ سبھاپتی: نہیں دیکھئے۔ ....مداخلت.....ابھی بہت سے ممبرس کو اس میں حصہ لینا ہے، اس لئے آپ وقت کا خیال رکھئے۔

پروفیسر سیف الدین سوز: مختصر، میں اس لئے کہتا ہوں شاہد صاحب، مجھے اس میں کوئی ضد نہیں ہے، مگر میں یہ سمجھتا ہوں کہ حیدرآباد میں جو یونیورسٹی ہے اور یہ یونیورسٹی قائم کرنے والے ہیں، اسے میری نظر میں کیوں کہ اس پر کوئی بحث نہیں ہوئی ہے، اردو کے فروغ کے لئے کوئی فائدہ نہیں ہوگا۔ جب میں مسلمان کی بات کرتا ہوں۔.....مداخلت......سنیئے نا.....مداخلت......

شری اُپ سبھاپتی: صدیقی صاحب، یہ ان کے وِچار ہیں۔

پروفیسر سیف الدین سوز: میں یہ کہتا ہوں جناب عالی، میں کیوں کہہ رہا ہوں۔.....مداخلت......

شری اُپ سبھاپتی: نہیں آپ ان کا نام نہیں لیجئے۔

پروفیسر سیف الدین سوز: میں ایک طرف اردو یونیورسٹی کا نام دیکھتا ہوں تو دوسری طرف دیکھتا ہوں کہ ۱۱ کروڑ کے بجٹ سے اردو کے فروغ کے لئے کاؤنسل ہے، اس نے کتنا عمدہ کام کیا ہے۔ اگر ہم گوورنمنٹ سے یہ مطالبہ کرتے ہیں کہ ۵ گنا وہ گرانٹ بڑھائیے، تو مجھے نظر آتا ہے کہ مدرسوں کا ماڈرنائزیشن ہوگا، کمپیوٹر ہوگا اور اردو کمپیوٹر کا اس ملک میں پھیلاؤ ہوگا اور اردو زبان کی خدمت ہوگی۔ یہ افسوس کی بات ہے کہ اردو کاؤنسل کے پاس ۱۱ کروڑ کا بجٹ ہے اور انکا کام جو ہے وہ شاندار روپ میں لکھے جانے کے لائق

........(وقت کی گھنٹی)........

جہاں تک یہ ہے کہ یہ مسلمانوں کی زبان نہیں ہے، یہ مسلمانوں کی زبان ہے، مگر صرف مسلمانوں کی زبان نہیں ہے۔ اس لئے میں یاد دلا رہا ہوں کہ چکبست کو یاد کرو، ترلوک چند محروم کو یاد کرو، رتن ناتھ سرشار کو یاد کرو، کشن چندر کو یاد کرو، رگھوپتی سہائے گورکھپوری کو یاد کرو، جس نے کہا کہ ہندی، جو اصلی ہندی ہے،

سنسکریٹائزڈ ہندی نہیں، جو ہندوستانی ہے بولنے والی، اس کے ۹۵ فیصدی الفاظ جو ہیں، وہ اردو ہیں۔ آنند نرائن ملاّ کو یاد کرو، گوپی چند نارنگ کو یاد کرو اور میں اس سدن کو یاد دلاتا ہوں کہ جب مہاتما گاندھی نے آزادی کی لڑائی میں اردو کے جذبات انگیز نعرے سنے تو انہوں نے اپنے ساتھیوں سے، مولانا آزاد اور دوسرے لوگوں سے اردو سیکھنا شروع کیا۔ گاندھی جی پر آزادی کی لڑائی میں اردو کا اتنا اثر تھا۔ اصل میں جنابِ عالی، اردو زندہ ہے تو اردو کی داخلی قوت سے۔ فلمی دنیا میں اردو نے اپنا لوہا منوایا ہے۔ ابھی پنجاب کے میرے بھائی بات کر رہے تھے "ہند سماچار"، "ملاپ" اور دوسرے اخباروں کی، لیکن پنجاب کی سرکار کچھ نہیں کرتی بلکہ تعجب کی بات ہے اور خوشی کی بات ہے کہ جن لوگوں نے پہلے اسکولوں میں اردو پڑھی، آج وہ اپنے گھروں میں اپنے بچوں کو اردو پڑھاتے ہیں اور کہتے ہیں کہ یہ بڑی میٹھی زبان ہے۔ میں پنجاب کے لوگوں کو مبارکباد دیتا ہوں۔

شری اُپ سبھاپتی: سوز صاحب، اب ختم کیجئے۔

پروفیسر سیف الدین سوز: تو جنابِ عالی میں آپ کی وساطت سے ایک درخواست کرتا ہوں وزیر اعظم کی خدمت میں، خط بھی لکھوں گا اور شاید ہم سب کو خط لکھنا چاہئے کہ وہ دانشوروں کو، اردو کی شناس رکھنے والوں کو، اردو کے فروغ کی بات سمجھنے والوں کو بلائیں، ایک کمیٹی تشکیل دیں اور ایک سنجیدہ غور و فکر ہو کہ اس ملک میں اردو کا مستقبل کیسے سنوارا جائے۔ یہ ہمارے بھائی جواب دے دیں گے، لیکن انکی اپنی دقتیں ہیں۔ تو میں آپ کے مادھیم سے درخواست کروں گا اور ان کی وساطت سے درخواست کرتا ہوں کہ ان کو وزیر اعظم تک یہ بات پہنچانی چاہئے کہ وہ ہم سب کو اور باہر جو دانشور ہیں، جو اردو جانتے ہیں، ان کو بلائیں اور ایک بڑی لمبی بحث ہو وزیر اعظم کے ساتھ کہ اردو کا مستقبل کیسے سنوارا جائے۔

بہت بہت شکریہ۔

श्री मोतिउर रहमान (बिहार): उपसभापति महोदय, मैंने बिहार में उर्दू की बद्हाली के बारे में क्वैश्चन किया था। मैं आपको मुबारकबाद देता हूं, मैं शुक्रिया अदा करता हूं कि आज उर्दू की हालत पर बहस करने और सारे हिंदुस्तान के लोगों की बात जानने का हम लोगों को मौका मिला, लेकिन यह बात सही है कि उर्दू को जो जगह मिलनी चाहिए, वह नहीं मिली। वही कहावत बनी कि, ''मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की।'' सरकारें आती रहीं और जाती रहीं, हम लोगों को आश्वासन देते रहे। मैं आजादी के पहले की बात कहता हूं कि सारे हिंदुस्तान में जमीन की अगर रजिस्ट्री होती थी तो वह 80 परसेंट उर्दू में होती थी, सारे स्कॉलर उर्दू के होते थे, उर्दू के जानने वाले होते थे। उसमें यह अंदाजा नहीं होता था कि कोई हिंदू है या मुसलमान है, लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता देश में फासिस्ट शक्तियां, सांप्रदायिक शक्तियां उर्दू के साथ नाइंसाफी करती रहीं, नफरत की दीवार खड़ी करती रहीं और इस तरह उर्दू को नुकसान पहुंचाने का काम किया गया। आज जब-जब चुनाव आते हैं, सारी पार्टियों उर्दू को हक दिलाने की बात करती हैं, लेकिन सरजमीं पर अगर ईमानदारी से सर्वे कराया जाए, अगर इसे ईमानदारी से देखा जाए तो उर्दू को जितना हक मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला। आजादी के बाद से आज तक जिस ईमानदारी से हम उर्दू वाले देश की खिदमत करते रहे, आजादी की लड़ायी में हिस्सा लेते रहे और दुश्मनों से मुकाबला करते रहे, उतना हक नहीं मिला। हमारे फातमी साहब बिहार से आते हैं और खुशकिस्मती है कि वह वजीरे तालीम हैं। बिहार में जब भा॰ज॰पा॰ की सरकार थी तो सारे मदरसों में ये कहते थे कि वहां आई॰एस॰आई॰ का अड्डा है, कभी वहां छापामारी करवाते थे। उन्होंने वहां उसको बहुत नुकसान पहुंचाने का काम किया। उपसभापति महोदय, ऐसे हालात थे। मैं सरकार को बताना चाहता हूं कि बिहार में आठ-आठ महीने मदारिस के टीचरों को, उलमा-ए-कराम को पे नहीं मिलती है। वे लोग भूखे पेट किसी तरह लड़कों को पढ़ाने का काम करते हैं। जब उर्दू जुबान के बारे में नोटिफिकेशन हुआ, मैं उस समय बिहार विधान सभा का सदस्य था, एम.एल.ए. था। हम लोगों ने उस वक्त के कांग्रेस के चीफ मिनिस्टर डा॰ जगन्नाथ मिश्र जी को मुबारकबाद दी थी, लेकिन जो चीजें उन्होंने कही थीं, उनका इम्प्लिमेंटेशन नहीं हुआ। उन्होंने नोटिफिकेशन में लिखा था कि थाने में उर्दू में भी एफ॰आई॰आर॰ होगा। उन्होंने यह भी कहा था कि हर थाने में उर्दू जानने वाला एक दारोगा, जमादार या मुंशी में से कोई बहाल होगा, लेकिन बद्किस्मती से ऐसा नहीं हुआ। उर्दू की आज यह हालत है कि हमारे उर्दू स्कूलों में भी उर्दू पढ़ाने वाले टीचर नहीं हैं। वे रिटायर कर गए, लेकिन उनकी जगह कोई बहाली नहीं हुई। आखिर कैसे चलेगा उर्दू का विकास, उर्दू का फरोग? जब हमारे बच्चे मजबूरन दूसरे लैंग्वेज पढ़ने को मजबूर हो रहे हैं, तो उर्दू कैसे बढ़ेगी? मैं समझता हूं कि आज उर्दू टीचर की 9 हजार जगह खाली है। आज वहां राष्ट्रपति शासन है। मैं मंत्री जी से मांग करना चाहता हूं कि आप महीना-एक-महीने के अंदर अगर उर्दू का, यू.पी.ए. गवर्नमेंट के एग्रीमेंट का ...(घंटी)... विकास चाहते हैं, तो आप निश्चित रूप से इस काम को, उर्दू को बढ़ावा देने का काम करें।

उपसभापति महोदय, उर्दू में किताब नहीं है। लड़कों के गार्जियन तमाम दुकानों पर खोज कर चले जाते हैं, लेकिन कहीं उसका अता-पता नहीं है। उर्दू की किताबें छप नहीं रही हैं। क्या आप उर्दू का विकास करना चाहते हैं? कैसे आप उर्दू का विकास करना चाहते हैं? यह तो * बनाने की बात है कि उर्दू की किताब नहीं है और आप कहते हैं कि हम उर्दू के विकास का काम करते हैं, यह बहुत अफसोस की बात है। आप सबसे पहले ध्यान दीजिए कि उर्दू की किताब हो, जो उर्दू के अखबार हैं, आप उर्दू के अखबारों को ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: आप बोलिए।

श्री मोतिउर रहमान: सर, मैं दो मिनट बोलूंगा। मैं मांग करता हूं कि लड़कियों के लिए जो हमारी उर्दू पढ़ने वाली लड़कियां हैं, उनके कहीं स्कूल नहीं हैं। बिहार के हर जिले में, इस देश के हर जिले में, जहां 10 प्रतिशत से ज्यादा उर्दू पढ़ने वाले, बोलने वाले हैं, वहां हर जगह उर्दू स्कूल खोलने के लिए कोशिश करनी चाहिए। सर्व शिक्षा पर अधिक-से-अधिक ध्यान दिया जाए।

आपने कहा कि बिहार में उर्दू सेकंड लैंग्वेज है। अभी हमारे शाहिद साहब ने कहा कि छः सौ ट्रांसलेटर बहाल हैं, तीन सौ ट्रांसलेटर और सहायक ट्रांसलेटर बहाल हैं, लेकिन उनसे उर्दू में काम नहीं लिया जाता है। मेरा चैलेंज है कि उर्दू में एक भी दरख्वास्त कहीं नहीं ली जाती है, उस पर कोई कार्रवाई नहीं होती है। अगर कोई आदमी उर्दू में दरख्वास्त देता है, तो उसे ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: आपने* कहा है, जो एक अनपार्लियामेंटरी वर्ड है, इसको निकाल दिया जाएगा।

श्री मोतिउर रहमान: हां, निकाल दीजिए। उसकी जगह कोई अच्छा शब्द जुड़वा दीजिए। ...(व्यवधान)...

श्री जय राम रमेश: आप ही उर्दू का कोई अच्छा शब्द कह दीजिए ना। ...(व्यवधान)...

श्री मोतिउर रहमान: मैंने कह तो दिया ...(व्यवधान)... नहीं, मेरा कहना है कि ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: वह ठीक है ...(व्यवधान)...

श्री मोतिउर रहमान: इसलिए मैं आपसे मांग करता हूं कि उर्दू का बजट अलग होना चाहिए। उर्दू का हर प्रदेश में अलग बजट हो। उर्दू के विकास के लिए उसे नौकरी से जोड़ना चाहिए, रोजगार से जोड़ना चाहिए, व्यवसाय से जोड़ना चाहिए। टी.वी. की जो बात आई, उर्दू में, हमारे एक भाई साहब आन्ध्र प्रदेश के चन्द्र बाबू नायडू जी की बहुत तारीफ कर रहे थे। एक तरफ उर्दू के विकास की बात कर रहे थे और दूसरी तरफ उर्दू के कातिलों से दोस्ती करके उर्दू को नुकसान पहुंचा रहे थे। सबसे बड़ी मुसीबत की बात यह थी कि एक तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ा रहे थे और दूसरी तरफ तलवार लिए हुए थे। ...(व्यवधान)...

*Expunged as ordered by the Chair.

श्री एस.एम.लालजन बाशा: देश में आजादी के बाद जितना कांग्रेस से मुसलमान को नुकसान हुआ है, दूसरी किसी पार्टी से नहीं हुआ है। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: आप बैठिए। श्री मोतिउर रहमान जी, आप बोलिए और जल्दी खत्म कीजिए।

श्री मोतिउर रहमान: सर, इसलिए मैं मंत्री जी से मांग करता हूं। ...(व्यवधान)...

श्री एस.एम.लालजन बाशा: सर, डा॰ मुरली मनोहर जोशी जी द्वारा जितना पैसा, जितना बजट दिया गया, वह कांग्रेस ने 40 साल में नहीं दिया। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: आप बैठिए। बैठिए, प्लीज। ...(व्यवधान)...

श्री मोतिउर रहमान: इस बात के लिए मैं मुबारकबाद देता हूं कि आपने उर्दू के बारे में सोचा, लेकिन आपने अपनी सारी सोच गलत कर दी कि उर्दू के कातिलों से दोस्ती कर ली। आपकी उर्दू के लिए मोहब्बत खत्म हो गई। ...(व्यवधान)...

श्री एस.एम.लालजन बाशा: *

श्री उपसभापति: देखिए, यह विषय अलग है। यह रिकार्ड में नहीं जाएगा। ...(व्यवधान)...

इस विषय पर बात नहीं हो रही। आप बैठिए। मोतिउर रहमान जी, आप खत्म कीजिए।

श्री मोतिउर रहमान: सर, इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि उर्दू के विकास के लिए पूरे देश में काम हो। बिहार में चूंकि राष्ट्रपति शासन है, मैं माननीय मंत्री जी से यह पूछना चाहता हूं कि कब से वहां बिहार की उर्दू यूनिवर्सिटी पूरी तरह चालू होगी? सारे मदारिस को मिलाकर आप उसको कब से प्रारंभ करेंगे? मुझे उम्मीद है कि हमारे मंत्री जी इसका जवाब देंगे। चूंकि वे बिहार से हैं, बिहार की धरती से उनको मोहब्बत है, उर्दू से भी उनको मोहब्बत है, वे बहादुर आदमी भी हैं, इसलिए वे जरूर काम करवा देंगे।

श्री उपसभापति: मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी। आप तीन-चार मिनट में अपनी बात कहकर खत्म कर दें।

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी (मध्य प्रदेश): मोहतरम डिप्टी चेयरमैन साहब, मैं कोशिश करूंगा तीन-चार मिनट में ही अपनी बात को पूरी कर लूं। सवाल यह है कि उर्दू जुबां पर बहस जिस गैर-संजीदगी के साथ यहां हो रही है, मैं बहुत मुत्ताफिर हूं कि इस गैर-संजीदगी के माहौल में कोई भी संजीदा और जिम्मेदार हुकूमत कहां तक उर्दू के साथ इंसाफ कर पाएगी। मैं समझता हूं कि हम खुद उसके साथ इंसाफ़ करने में नाइंसाफी कर रहे हैं। यह हंसने और जुबान के

*Not recorded.

साथ मजाक करने का माहौल नहीं है। मैं सही बात रहा हूं आपको, कि उर्दू जुबां नहीं मर रही है, हिंदुस्तान की तहजीब मर रही है। जो लोग इस बात को महसूस कर रहे हैं कि उर्दू जुबां मर रही है, सभी इस बात को महसूस कर रहे हैं कि उर्दू जुबां और यह तहजीब खत्म हो रही है, यह उर्दू जुबां हिंदुस्तान के अखलाक को ऊंचे मुकाम पर ले जाने वाली जुबां है। उर्दू जुबां हिंदुस्तान की गुलामी को आजादी में बदलने वाली जुबां है और नारए इन्कलाब, जो उर्दू जुबां का नारा है, पहली मर्तबा हिंदुस्तान से तन के गोरे और मन के काले अंग्रेजों को भगाने के लिए भगत सिंह साहब ने इस नारे का इस्तेमाल किया था।

किस जुबां में लगा नारए इन्कलाब
भूल जाएंगे क्या इसको अहले वतन?

सर, यह संजीदगी से सोचने की बात है कि उर्दू जुबां इख़लाकियात की जुबां है, हर आदमी की जरुरत है। जब भी हाऊस में कोई आदमी एक शेर कहीं से भी पढ़ देता है, इस साइड से हो या उस साइड से भी हो, किसी भी कौम, किसी भी वर्ग, किसी भी तहजीब और कल्चर का आदमी हो, जब वह उर्दू जुबां में शेर पढ़ता है, तो पूरे हाऊस के अहसासात में जान पैदा हो जाती है और लोग इस बात की फरमाइश करते हैं कि यह बात बार बार कही जाए। उर्दू जुबान रस घोलते अलफाज़ और खनकते हुए लहजों का नाम है। उर्दू जुबान शीरीनी ए कलाम का नाम है, उर्दू जुबान हमारी अखलाकी तहज़ीब की जमानत का नाम है मगर यह जुबान सिर्फ कि इतने स्कूल खोले गए, उतने स्कूल खोले गए, यहां नहीं चला, वहां नहीं चला यह सतही बहस है। बिल्कुल सही कहा है प्रो॰ सोज साहब ने कि इस बहस के जरिए हमारा यह हाउस, जिसमें गंगा जमुनी तहज़ीब बसती है, इसमें हिन्दू-मुस्लिम-सिख-इसाई हैं और इन्ही का नाम हिन्दुस्तान है। इन तमामतर लोगों की तरफ से मुत्ताफिका तौर पर एक रिजोल्यूशन पास होकर जाना चाहिए कि प्राइम मिनिस्टर आफ इंडिया के साथ उर्दू जुबान को इंसाफ देने के लिए और उसके रोशन मुसतकबिल के लिए एक ऐसी करारदाद मंजूर की जाए जिसकी रोशनी में हिन्दुस्तान में उर्दू जुबान फरोग और तरक्की की राह पर गामज़न हो, सच्ची बात, सर, यह है कि

आई न रास जिसको नशीमन की जिंदगी,
अपने वतन में रहकर भी जो बे-वतन है आज।
रोती है जो बहार में लुत्फे बहार को,
हर फूल जिसके वास्ते रंगीं कफन है आज।
बेजार जिससे बुतकदा बरहम निजामे दौर,
जिससे खिंची-खिंची हुई गंगो जमन है आज।
उर्दू का हाल पूछते हो अहले हिन्द क्या,
दोनों जहां की रुहें खां खस्ता तन है आज।

दुनियां के मुमालिक में आप चले जाइए, अमेरिका में यूरोप में, पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में उर्दू जुबान अपनी फतहयाबी और कामरानी के झंडे गाड़े हुए हैं। दुनियां के दूसरे मुमालिक में लोग उर्दू जुबान के करीब इसलिए नहीं आ रहे हैं कि यह मुसलमानों की जुबान है, इसलिए आ रहे हैं कि यह हिन्दुस्तान में जन्मी है, हिन्दुस्तान में पैदा हुई है, हिन्दुस्तान की जुबान है और हिन्दुस्तान की तहजीब, हिन्दुस्तान के तमद्दुन की जमानत और रोशन जमानत बनकर दुनिया के दिलों में घर पैदा कर लेती है। यकीनन जिन लोगों को भी उर्दू जुबान की जानकारी है, उनकी जुबान बहुत प्यारी है, इसलिए कि उर्दू जुबान, हमारी जुबान में बेपनाह निखार पैदा कर देती है, हर आदमी में हुस्ने अखलाक का जरिया पैदा करती है और लोगों को अपनी तरफ मुतवज्जह करती है। ऐसी प्यारी और जिन्दा जुबान को जिन्दा रखने के लिए हर उस हिन्दुस्तानी इंसान के अंदर जजबा पैदा होना चाहिए जिसे अपने मुल्क से, अपने मुल्क के कल्चर से, अपने मुल्क की तहजीब से प्यार है। सर, मैं कोई लेक्चर नहीं दूंगा, दो-तीन सुझाव हैं, मगर इस जुबान के साथ हो क्या रहा है। अभी किताब का मसला आया। किताबों के मामले में......(व्यवधान)

श्री उपसभापति: यहां वक्त की भी कमी है।

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: मैं खत्म कर रहा हूं, मैं कोई लम्बी-चौड़ी तकरीर नहीं करुंगा। सर, मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि अभी 20 अप्रैल, 2005 को मैंने यहां स्पेशल मेंशन किया था और आपके तवस्सुर से एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ और उर्दू से मुताल्लिक सारी बातें की थी। आज मेरे हाथ में एक दर्दमन खातून की तहरीर है जो अखबार के हवाले से मैं आपके सामने रखना चाहता हूं कि जिस उर्दू जुबान के लिए हम और आप यहां इतना बेचैन होकर उसके रोशन मुसतकबिल की जमानत वज़ीरे तालीम से चाहते हैं, उस उर्दू जुबान के साथ नाम के नीचे और चिराग तले क्या हो रहा है, जरा उसको मुलाहिजा कर लीजिए और फिर समझ लीजिए कि मेरा ख्याल यह है कि आप तमाम लोगों के अंदर यह पॉवर है कि पहले अपनी पार्लियामेंट के अंदर उर्दू को उसका हक दिलवा दीजिए। आपकी अपनी पार्लियामेंट के अंदर उर्दू का हक मर रहा है। सर, मुझे अफसोस इस बात का है कि जिस पार्लियामेंट के अंदर उर्दू का हक मर रहा हो, वह पार्लियामेंट हिन्दुस्तान वालों को उर्दू का हक क्या दिलआएगी। मैं आपसे अर्ज करुं पहले पार्लियामेंट की उर्दू डिबेट उर्दू स्क्रिप्ट में शाया की जाती थी लेकिन कुछ सालों से पार्लियामेंट की डिबेट के मुसतकिल रिकार्ड से उर्दू को बाहर निकाल दिया गया है और अब हाउस में की जाने वाली उर्दू तकरीरें उर्दू स्क्रिप्ट में शाया नहीं हो रही हैं, जबकि कुछ सालों पहले तक ऐसा हो रहा था। सर, इस पर एक मर्तबा मैंने और भी आवाज उठायी थी। मैं आज याद करना चाहता हूं साबिक सदर-ए-जम्हूरिया हिन्दुस्तान डा॰ शंकर दयाल शर्मा साहब को, डा॰ शंकर दयाल शर्मा बहुत अज़ीम शख्सियत थे इस मुल्क की, जब मैं इस हाउस में 1990 में आया था तो डा॰ साहब ने मुझे चेम्बर में बुलाकर के कुछ बातें समझाई थीं। मैं यहां उर्दू जुबान में बोल रहा था, हनुमनतप्पा साहब यहां मौजूद थे। कहने लगे,

सर, आज़मी साहब की गुफ्तगू सिर के ऊपर से जा रही है, मैंने कहा कि, सर, मैं रोजमर्रा की जुबान बोल रहा हूं। मैं ऐसा नहीं बोल रहा हूं कि–"बरबते दिल पर नगमा संजिया हो रही है। तो डा॰ साहब ने मुझे बुलाया, मैंने कहा कि अगर मेरी जुबान समझ में नहीं आ रही है तो यहां उर्दू का इंतजाम कर दिया जाए। मैं सलाम करता हूं उस अज़ीम-उ-शान शख्सियत को, जो पैदा हुआ था भोपाल में और आगे फिर एक मर्तबा इस हाउस से श्रद्धांजलि देना चाहता हूं जिसने तालीम व तरक्की की राहें हासिल की थीं लखनऊ में, जिसके बाप का नाम खुशी लाल था, मैंने कहा था, "फखरे ए तहजीबें अवध हैं, नाज़िशे भोपाल हैं, कौमी यकजहती का मरकज़ हैं, खुशी के लाल हैं।" वह खुशी का लाल हमें खुशी देकर गया। वह उर्दू जुबान को तरक्की देकर गया, उर्दू का मुतराज्जिम हमें यहां देकर के गया। उर्दू में जो पार्लियामेंट की बुक्स थीं, उनमें हमारी उर्दू लैंग्वेज जिंदा थी। आज हमारी पार्लियामेंट में बैठकर उर्दू को कौन मार रहा है? क्या यही उर्दू के साथ इन्साफ है? और जिस पार्लियामेंट के अंदर उर्दू मर रही है, उस मुल्क के अंदर उर्दू कैसे जिंदा होगी? यह एक बहुत बड़ा सवालिया निशान है। मैं अर्ज़ करना चाहता हूं कि इसको बहुत ही अच्छी तरह से देखा जाये और समझा जाये और जिन लोगों ने भी इस तरह की गलत हरकत की है, उनके खिलाफ मैं जबरदस्त कार्यवाही की डिमांड करता हूं, मांग करता हूं।... (समय की घंटी)

सर, मैं आखिरी बात कहना चाहता हूं, मैं कोई तकरीर नहीं करना चाहता हूं।

श्री उपसभापति: वक्त की कमी है।

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: सर, मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि एनसीईआरटी का मामला क्या है? मैं एक मिसाल आपको देना चाहूंगा, यह राष्ट्रीय सहारा 4 मई, 2005 का मेरे हाथ में है, सिर्फ एक खत सुन लीजिए, आपको पता चल जायेगा कि क्या हो रहा है। एक मोहतरमा शहला माजिद हैं। वह लिखती हैं:– मुकर्रमी! यह बात कहते हुए मुझे बड़ी शर्मिंदगी का अहसास हो रहा है कि एनसीईआरटी जैसे बड़े इदारे में भी उर्दू और उर्दू वालों के साथ सौतेला वर्ताव किया जा रहा है। अब तक तो मेरे लिए यह सिर्फ सुनी-सुनाई और अखबारी बातें लगती थीं, लेकिन आज जब खुद मेरे साथ यह वर्ताव किया गया, तो लामुहाला मुझे कलम उठाने पर मजबूर होना पड़ा। हुआ यूं कि मुझे मेरे स्कूल की तरफ से उर्दू की पहली जमात से तीसरी जमात तक के 25 तलबा के लिए किताबें खरीदने के लिए एनसीईआरटी भेजा गया, क्योंकि 15 अप्रैल के अंग्रेजी रोजनामा हिन्दुस्तान टाइम्स में उर्दू किताबों के शाया होने की खबर स्कूल इंतजामिया तक पहुंच चुकी थ। इस इश्तहार में यह बात साफ-साफ लिखी हुई है कि उर्दू की किताबें एनसीईआरटी और देहली उर्दू अकादमी के सेल्स काउंटर पर दस्तियार हैं। लेकिन जब मैं एनसीईआरटी के सेल्स काउंटर पर पहुंची तो मुझसे बहुत भौंडा मजाक किया गया। पहले तो यह कहा गया कि जो किताबें आपको चाहिएं, आप पहले उनके कोड नम्बर लिखकर दें, जबकि मेरे ख्याल से कोड नम्बर जैसी चीजें तो

वहां के स्टाफ को पता होनी चाहिए, न कि किताबों के किसी खरीददार को। फिर भी, मैंने किसी तरह से कोशिश करके जब कोड नम्बर लिखकर दिये और उन्हें जब यह पता चला कि यह तो उर्दू की किताबें हैं, तो उन्होंने मुझे जवाब दिया कि मैडम, अभी भीड़भाड़ है और इंग्लिश किताबों का सीजन चल रहा है। आप एक दो हफ्ते बाद मालूम कर लीजिएगा। मैंने उनसे कहा, मैं नोएडा से इतना पैसा खर्च करके आ रही हूं और इतनी दूर बार-बार आना मेरे लिए मुमकिन नहीं है। इसके बावजूद उन्होंने मुझे किताबें देने से सख्ती से मना कर दिया, उनके रवैये से मुझे महसूस हुआ कि अगर मुझसे ऐसा वर्ताव किया जा रहा है, तो यहां उर्दू और उर्दू वालों के साथ कैसा बर्ताव किया जाता होगा? मैंने जब यह मालूम करने की कोशिश की कि यहां पर कोई ऐसा शख्स है जिसके सामने मैं अपनी परेशानी का इज़हार कर सकूं, तो लोगों ने मुझे चीफ बिजनेस मैनेजर के पास भेजा, लेकिन घंटों इंतजार करने के बाद भी जब उनकी कुर्सी खाली मिली, तो मैं पब्लिकेशन डिवीजन के हैड के पास गई, वहां भी यह माज़रा था, कमरा खुला हुआ, लेकिन साहब नदारद। बिल आखिर मैंने अपनी शिकायत एनसीईआरटी के डायरेक्टर के नाम दर्ज कराई।

लिहाजा मैं वजीर बराये फरोगे इन्सानी वसाइल की तवज्जो इस तरफ मबजूल कराना चाहती हूं कि जो सरकार हमेशा उर्दू और उर्दू वालों के लिए बड़े-बड़े वायदे करती रही है, उसके दौरे-हुक्मरानी में इस तबके के लोगों का इतना भी हक नहीं कि वह आसानी से उर्दू की किताबें एनसीईआरटी जैसे इरादे से खरीद सकें। सरकार को चाहिए कि ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करते हुए, अपने वायदे का पास व लिहाज रखे।...(समय की घंटी)...

सर, मैं खत्म कर रहा हूं। सर, मैं इतनी सी बात कहना चाहूंगा कि इस उर्दू के आशिकों में रघुपत सहाय, फिराक गोरखपुरी भी थे, यह सिर्फ मीर गालिब की जुबान नहीं है, यह हमारे मुल्क के उन तालीमयाफ्ता उर्दू के माहिरीन हिन्दू भाइयों की जुबान भी है, जिस जुबान ने हिन्दू-मुस्लिम एकजेहती को फरोग दिया, गंगा-जमुनी तहजीब जिससे जानी जाती है। आप इस जुबान को बचाइये, ताकि हिन्दुस्तान की गंगा-जमुनी तहजीब को बचाया जा सके। शुक्रिया।

†[مولانا عبیداللہ خان اعظمی "مدھیہ پردیش": محترم ڈپٹی چیئرمین صاحب، میں کوشش کروں گا تین چار منٹ میں ہی بات کو پوری کرلوں۔ سوال یہ ہے کہ اردو زبان پر بحث جس غیر سنجیدگی کے ساتھ یہاں ہو رہی ہے، میں بہت متفکر ہوں کہ اس غیر سنجیدگی کو ماحول میں کوئی بھی سنجیدہ اور ذمہ دار حکومت کہاں تک اردو کے ساتھ انصاف کر پائے گی۔ میں سمجھتا ہوں کہ ہم خود اس کے ساتھ انصاف کرنے میں ناانصافی کر رہے ہیں۔ یہ ہنسنے اور زبان کے ساتھ مذاق کرنے کا

†[ ] Transliteration in Urdu Script.

ماحول نہیں ہے۔ میں صحیح بتا رہا ہوں آپ کو، کہ اردو زبان نہیں مر رہی ہے، ہندوستان کی تہذیب مر رہی ہے۔ لوگ اس بات کو محسوس کر رہے ہیں کہ اردو زبان مر رہی ہے، ۔ اس بات کو محسوس کر رہے ہیں کہ اردو زبان اور تہذیب ختم ہو رہی ہے، اردو زبان ہندوستان کے اخلاق کو اونچے مقام پہ لے جانے والی زبان ہے۔ اردو زبان ہندوستان کی غلامی کو آزادی میں بدلنے والی زبان ہے اور نعرۂ انقلاب، جو اردو زبان میں نعرہ ہے، پہلی مرتبہ ہندوستان سے تن کے گورے اور من کے کالے انگریزوں کو بھگانے کے لئے بھگت سنگھ صاحب نے اس نعرے کا استعمال کیا تھا۔

کس زباں میں لگا نعرۂ انقلاب
بھول جائیں گے کیا اسکو اہلِ وطن

سر، یہ سنجیدگی سے سوچنے کی بات ہے کہ اردو زبان اخلاقی زبان ہے، ہر آدمی کی ضرورت ہے۔ جب بھی ہاؤس میں کوئی آدمی ایک شعر کہیں سے بھی پڑھ دیتا ہے، اس سائڈ سے ہو یا اس سائڈ سے بھی ہو، کسی بھی قوم، کسی بھی ورگ، کسی بھی تہذیب اور کلچر کا آدمی ہو، جب وہ اردو زبان میں شعر پڑھتا ہے، تو پورے ہاؤس کے احساسات میں جان پیدا ہو جاتی ہے اور لوگ اس بات کی فرمائش کرتے ہیں کہ یہ بات بار بار کہی جائے۔

اردو زبان رس گھولتے الفاظ، اور کھنکتے ہوئے لہجوں کا نام ہے۔ اردو زبان شیرینیٔ کلام کا نام ہے، اردو زبان ہماری اخلاقی تہذیب کی ضمانت کا نام ہے مگر یہ زبان صرف یہ کہ اتنے اسکول کھولے گئے، اتنے اسکول نہیں کھولے گئے، یہاں نہیں چلا وہاں نہیں چلا، یہ سطحی بحث ہے۔ بالکل صحیح کہا ہے پروفیسر سوز صاحب نے کہ اس بحث کے ذریعے ہمارا یہ ہاؤس جس میں گنگا جمنی تہذیب بستی ہے، اس میں ہندو، مسلم، سکھ، عیسائی اور انہی جیسے زمین کا نام ہندوستان ہے۔ ان تمام تر لوگوں کی طرف سے متفقہ طور پر ایک ریزولوشن پاس ہو کر جانا چاہیے کہ پرائم منسٹر آف انڈیا کے ساتھ اردو زبان کو انصاف دینے کے لئے اور اس کے روشن مستقبل کے لئے ایک ایسی قرارداد منظور کی جائے جس کی روشنی میں ہندوستان میں اردو زبان فروغ اور ترقی کی راہ پہ گامزن ہو، یہی بات ہے۔ مزید یہ ہے کہ ۔

آئی نہ راس جس کو نشیمن کی زندگی
اپنے وطن میں رہ کر بھی جو بے وطن ہے آج

رونق ہے جو بہار میں لطفِ بہار کو ہر پھول جس کو واسطے رنگین گلشن سے آج
بیزار جس سے بت کدہ بزم نظام دیر جس سے کھنچی کھنچی ہوئی گنگ و جمن ہے آج
اردو کا حال پوچھتے جو اہل ہند کیا دونوں جہاں کی روح رواں خستہ تن ہے آج

دنیا کے ممالک میں آپ چلے جایئے، امریکہ میں، یوروپ میں، پورب، پچھم، اتر، دکشن میں اردو زبان اپنی فتح یابی اور کامرانی کے جھنڈے گاڑے ہوئے ہے۔ دنیا کے دوسرے ممالک میں لوگ اردو زبان کے قریب اس لئے نہیں آرہے ہیں کہ یہ مسلمانوں کی زبان ہے، اس لئے آرہے ہیں کہ یہ ہندوستان میں جنمی ہے، ہندوستان میں پیدا ہوئی ہے، ہندوستان کی زبان ہے اور ہندوستان کی تہذیب، ہندوستان کے تمدن کی ضمانت اور روشن ضمانت بن کر دنیا کے دلوں میں گھر پیدا کر لیتی ہے۔ یقیناً جن لوگوں کو بھی اردو زبان کی جانکاری ہے، انکی زبان بہت پیاری ہے، اس لئے کہ اردو زبان، زبان میں بے پناہ نکھار پیدا کر دیتی ہے، آدمی کے حسنِ اخلاق کا ذریعہ پیدا کرتی ہے اور لوگوں کو اپنی طرف متوجہ کرتی ہے۔ ایسی پیاری اور زندہ زبان کو زندہ رکھنے کے لئے ہر اس ہندوستانی انسان کے اندر جذبہ پیدا ہونا چاہئے جسے اپنے ملک سے، اپنے ملک کے کلچر سے، اپنے ملک کی تہذیب سے پیار ہے۔

سر، میں کوئی لیکچر نہیں دونگا، دو تین بچھاؤ ہیں، مگر اس زبان کے ساتھ ہو کیا رہا ہے۔ ابھی کتاب کا مسئلہ آیا۔ کتابوں کے معاملے میں......مداخلت......

شری اُپ سبھاپتی: یہاں وقت کی بھی کمی ہے۔

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: میں ختم کر رہا ہوں، میں کوئی لمبی چوڑی تقریر نہیں کروں گا۔ سر، میں صرف اتنا کہنا چاہتا ہوں کہ ابھی ۲۰ اپریل، ۲۰۰۵ء کو میں نے یہاں اسپیشل مینشن کیا تھا اور آپ کے توسط سے این.سی.ای.آر.ٹی. اور اردو سے متعلق ساری باتیں کی تھیں۔ آج میرے ہاتھ میں ایک دردمند خاتون کی تحریر ہے جو اخبار کے حوالے سے میں آپ کے سامنے رکھنا چاہتا ہوں کہ جس اردو زبان کے لئے ہم اور آپ یہاں اتنا بے چین ہو کر اس کے روشن مستقبل کی ضمانت وزیر تعلیم سے چاہتے ہیں، اس اردو زبان کے ساتھ ناک کے نیچے اور چراغ تلے کیا ہو رہا ہے؟

ذرا اس کو ملاحظہ کر لیجئے اور پھر سمجھ لیجئے کہ میرا خیال یہ ہے کہ آپ تمام لوگوں کے اندر یہ پادرے کہ پہلے اپنی پارلیمنٹ کے اندر اردو کو اس کا حق دلوا دیجئے۔ آپکی اپنی پارلیمنٹ کے اندر اردو کا حق

مر رہا ہے۔ سر، مجھے افسوس اس بات کا ہے کہ جس پارلیمنٹ کے اندر اردو کا حق مر رہا ہو، وہ پارلیمنٹ ہندوستان والوں کو اردو کا حق کیا دلوائے گی؟ میں آپ سے عرض کروں پہلے پارلیمنٹ کی ڈبیٹ کے مستقل ریکارڈ سے اردو کو باہر نکال دیا گیا ہے، اور اب پارلیمنٹ میں کی جانے والی اردو تقریریں اردو اسکرپٹ میں شائع نہیں ہو رہی ہیں، جبکہ کچھ سالوں پہلے تک ایسا ہو رہا تھا۔ سر، اس پر ایک مرتبہ میں نے اور بھی اٹھایا تھا۔ میں آج یاد کرنا چاہتا ہوں سابق صدر جمہوریہ ہندوستان ڈاکٹر شنکر دیال شرما صاحب کو، ڈاکٹر شنکر دیال شرما وہ عظیم الشان شخصیت تھے اس ملک کی، جب میں اس ہاؤس میں ۱۹۹۰ء میں آیا تھا تو ڈاکٹر صاحب نے مجھے چیمبر میں بلا کر کچھ باتیں سمجھائی تھیں۔ میں یہاں اردو زبان میں بول رہا تھا، ہنومن تھپا صاحب یہاں موجود تھے۔ کہنے لگے سر، اعظمی صاحب کی گفتگو سر کے اوپر سے جا رہی ہے، میں نے کہا کہ سر، میں روزمرّہ کی زبان بول رہا ہوں۔ میں ایسا نہیں بول رہا ہوں کہ "بربتِ دل پر نغمہ سنجیا ہو رہی ہیں"۔ تو ڈاکٹر صاحب نے مجھے بلایا، میں نے کہا کہ اگر میری زبان سمجھ میں نہیں آ رہی ہے تو یہاں اردو کا انتظام کر دیا جائے۔

میں سلام کرتا ہوں اس عظیم الشان شخصیت کو، جو پیدا ہوا تھا بھوپال میں اور آگے پھر ایک مرتبہ اس ہاؤس سے شردھانجلی دینا چاہتا ہوں جس نے تعلیم و ترقی کی راہیں حاصل کی تھیں لکھنؤ میں، جس کے باپ کا نام خوشی لال تھا، میں نے کہا تھا "فخرِ تہذیب اودھ ہیں، نازشِ بھوپال ہیں قومی یکجہتی کا مرکز ہیں، خوشی کے لال ہیں"۔ وہ خوشی کا لال ہمیں خوشی دے کر گیا۔ وہ اردو زبان کو ترقی دیکر گیا، اردو کا مترجم ہمیں یہاں دیکر گیا۔ آج جتنی بھی بکس ہم لوگوں کی تقریروں کی آتی ہیں، وہ اردو میں جو پارلیمنٹ کی بکس تھیں، ان میں ہماری اردو لینگویج زندہ تھی۔ آج ہماری پارلیمنٹ میں بیٹھ کر اردو کو کون مار رہا ہے؟ کیا یہی اردو کے ساتھ انصاف ہے؟ اور جس پارلیمنٹ کے اندر اردو مر رہی ہے، اس ملک کے اندر اردو کیسے زندہ ہوگی؟ یہ ایک بہت بڑا سوالیہ نشان ہے۔

میں عرض کرنا چاہتا ہوں کہ اس کو بہت ہی اچھے طرح سے دیکھا جائے اور سمجھا جائے اور جن لوگوں نے بھی اس طرح کی غلط حرکت کی ہے، ان کے خلاف میں زبردست کاروائی کی ڈیمانڈ کرتا ہوں، مانگ کرتا ہوں۔

.....(وقت کی گھنٹی).......

شری اُپ سبھا پتی: وقت کی کمی ہے۔

مولانا عبیداللہ خان اعظمی: سر، میں عرض کرنا چاہتا ہوں کہ این.سی.ای.آر.ٹی. کا معاملہ کیا ہے؟ میں ایک مثال آپ کو دینا چاہتا ہوں گا، یہ راشٹریہ سہارا ۴ مئی، ۲۰۰۵ء کا میرے ہاتھ میں ہے، صرف ایک خط سن لیجئے، آپ کو پتہ چل جائے گا کہ کیا ہو رہا ہے۔ ایک محترمہ شہلا ماجد ہیں۔ وہ لکھتی ہیں: ''مکرمی! یہ بات کہتے ہوئے مجھے بڑی شرمندگی کا احساس ہو رہا ہے کہ این.سی.ای.آر.ٹی. جیسے بڑے ادارے میں بھی اردو اور اردو والوں کے ساتھ سوتیلا برتاؤ کیا جا رہا ہے۔ اب تک تو میرے لئے یہ صرف سنی سنائی اور اخباری باتیں لگتی تھیں لیکن آج جب خود میرے ساتھ یہ برتاؤ کیا گیا تو لامحالہ مجھے قلم اٹھانے پر مجبور ہونا پڑا۔ ہوا یوں کہ مجھے میرے اسکول کی طرف سے اردو کی پہلی جماعت سے تیسری جماعت تک کے ۲۵ طلباء کے لئے کتابیں خریدنے کے لئے این.سی.ای.آر.ٹی. بھیجا گیا کیونکہ ۱۵ اپریل کے انگریزی روزنامہ ''ہندوستان ٹائمز'' میں اردو کتابوں کے شائع ہونے کی خبر اسکول انتظامیہ تک پہنچ چکی تھی۔ اس اشتہار میں یہ بات صاف صاف لکھی ہوئی ہے کہ اردو کی کتابیں این.سی.ای.آر.ٹی. اور دہلی اردو اکادمی کے سیلز کاؤنٹر پر دستیاب ہیں لیکن جب میں این سی ای آر ٹی کے سیل کاؤنٹر پر پہنچی تو مجھ سے بہت بھونڈا انداز کیا گیا۔ پہلے تو یہ کہا گیا کہ جو کتابیں آپ کو چاہئیں آپ پہلے ان کے کوڈ نمبر لکھ کر دیں۔ جبکہ میرے خیال سے کوڈ نمبر جیسی چیزیں تو وہاں کے اسٹاف کو پتہ ہونی چاہئیں نہ کہ کتابوں کے کسی خریدار کو۔ پھر بھی میں نے کسی طرح کوشش کر کے جب وہ کوڈ نمبر لکھ کر دئے اور انہیں جب یہ پتہ چلا کہ یہ تو اردو کی کتابیں ہیں تو انہوں نے مجھے جواب دیا کہ میڈم ابھی بھیتر بھاڑ ہے اور انگلش

کتابوں کا بیزان چل رہا ہے، آپ ایک دو ہفتے بعد معلوم کر لیجئے گا۔ میں نے ان سے کہا میرا ذ یئا۔ اسے اتنا پیسہ خرچ کر کے آ رہی ہوں اور اتنی دور بار بار آنا میرے لئے ممکن نہیں ہے۔ اس کے باوجود انہوں نے مجھے کتابیں دینے سے سختی سے منع کر دیا۔ ان کے رویے سے مجھے ایسا محسوس ہوا کہ اگر مجھ سے ایسا برتاؤ کیا جا رہا ہے تو یہاں اردو اور اردو والوں کے ساتھ کیسا برتاؤ کیا جاتا ہوگا! میں نے جب یہ معلوم کرنے کی کوشش کی کہ یہاں پر ایسا کوئی شخص ہے جس کے سامنے میں اپنی پریشانی کا اظہار کر سکوں تو لوگوں نے مجھے چیف بزنس منیجر کے پاس بھیجا لیکن گھنٹوں انتظار کرنے کے بعد بھی جب ان کی کرسی خالی ملی تو میں پبلی کیشنز ڈویژن کے ہیڈ کے پاس گئی۔ وہاں بھی یہی ماجرا تھا، کمرہ کھلا ہوا لیکن صاحب ندارد۔ بالآخر میں نے اپنی شکایت این سی ای آر ٹی کے ڈائریکٹر کے نام درج کرائی۔

لہٰذا میں وزیر برائے فروغ انسانی وسائل کی توجہ اس طرف مبذول کرنا چاہتی ہوں کہ جو سرکار ہمیشہ اردو اور اردو والوں کے لئے بڑے بڑے وعدے کرتی رہی ہے کیا اس کے دور حکمرانی میں اس طبقے کے لوگوں کا اتنا بھی حق نہیں کہ وہ آسانی سے اردو کی کتابیں این سی ای آر ٹی جیسے ادارے سے خرید سکیں۔ سرکار کو چاہئے کہ ایسے لوگوں کے خلاف سخت کاروائی کرتے ہوئے اپنے وعدے کا پاس و لحاظ رکھے۔

.......(وقت کی گھنٹی).........

سر، میں ختم کر رہا ہوں۔ سر، میں اتنی سی بات کہنا چاہوں گا کہ اس اردو کے عاشقوں میں رگھوپت سہائے، جناب فراق گورکھپوری، یہ صرف میر غالب کی زبان نہیں ہے، یہ ہمارے ملک کے ان تعلیم یافتہ اردو کے ماہرین ہندو بھائیوں کی زبان بھی ہے، جس زبان نے ہندو مسلم یکجہتی کو فروغ دیا، گنگا جمنی تہذیب جس سے جانی جاتی ہے۔ آپ اس زبان کو بچائیے، تاکہ ہندوستان کی گنگا جمنی تہذیب کو بچایا جا سکے۔ شکریہ۔

श्री उपसभापति: श्री तारिक अनवर।

PROF. SAIF-UD-DIN-SOZ: Sir, the Director of the NCERT should be summoned by the Hon. Minister to find out as to why such things are happening there.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The Minister has taken note of the information. The Minister has also taken note of what you have said.

श्री तारिक अनवर (महाराष्ट्र): उपसभापति, महोदय, सबसे पहले मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं कि इस अहम सबजैक्ट पर हम लोगों को बातचीत करने का आपने मौका दिया। यह बात बिल्कुल वाजिब है कि उर्दू के साथ जो सुलूक होता रहा है, जिसका जिक्र अभी पार्लियामेंट में सभी लोगों ने किया है, उसको दोहराकर मैं पार्लियामेंट का और आपका वक्त ज़ाया नहीं करना चाहता हूं। मैं मुख्तसर तौर पर अपनी बात कहना चाहता हूं कि आज हम सब लोग इस बात को कुबूल करते हैं कि हमारे मुल्क की जो तहज़ीब है, हमेशा हम यह कहते रहते हैं कि अनेकता में एकता है और यह हमारे मुल्क की खासियत है। मैं समझता हूं कि आज दुनिया में ऐसे बहुत कम मुल्क होंगे–जितनी जुबानें हमारे मुल्क में बोली जाती हैं, जितनी तहज़ीब और जिस तरह का हमारा कल्चर हे, शायद ही दुनिया में कहीं दूसरी जगह देखने को मिलता हो। जहां तक उर्दू की बात अभी कही गयी, यह बात बिल्कुल सही कही गयी कि उर्दू सिर्फ मुसलमानों की जुबान नहीं है, हम भी इस बात को स्वीकार करते हैं और मैं समझता हूं कि अभी उसका जिक्र भी किया गया कि सिर्फ मुसलमान ही नहीं, जो हमारे हिन्दू भाई हैं, उनकी भी कितनी दिलचस्पी रही है और कितना उनका कंट्रीब्यूशन रहा है, उर्दू को फरोग देने में। लेकिन अगर थोड़ी देर के लिए यह मान भी लिया जाए कि उर्दू मुसलमानों की जुबान है तो आखिर मुसलमान भी इस मुल्क के शहरी हैं और उनका भी हक बनता है। उनकी जुबान की हिफाजत करना भी इस मुल्क की हुकूमत का फर्ज बनता है। जहां तक उर्दू का सवाल है, उर्दू हिन्दुस्तान में पैदा हुई, यहीं परवान चढ़ी लेकिन इसके साथ बदकिस्मती यह रही कि जो हिन्दुस्तान की फिरकापरस्त ज़हनियत है, उसका शिकार इसको होना पड़ा और अफसोस इस बात का है कि पराए तो पराए हैं, अपनों से भी इसको जो सलूक मिलना चाहिए था, वह सलूक नहीं मिला। अभी शाहिद साहब ने और दूसरे लोगों ने एक बात अच्छी कही, जो मैं कह सकता हूं कि एक लफ्ज में यह कहा जा सकता है कि कोई भी जुबान तब तक ज़िंदा रहती है, जब तक उसको हुकूमत का संरक्षण मिलता है, हुकूमत की उसको सरपरस्ती मिलती है। उर्दू की बदकिस्मती यह रही कि हमेशा कहा गया, हमेशा उर्दू को मुसलमानों से जोड़कर उसका जो सियासी फायदा उठाना था, सभी लोगों ने, सभी सियासी पार्टियों ने उसको उठाने की कोशिश की लेकिन जब देने की बात आयी तो उसको उसका हक नहीं मिला। इसलिए मैं इस बात से पूरी तरह से मुत्तफिक हूं कि उर्दू को अगर ज़िंदा रखना है तो हुकूमत की सरपरस्ती बहुत ही ज़रुरी है। उर्दू को रोज़गार से जोड़ने की बात उन्होंने

कही है, उर्दू चैनल शुरु करने की बात कही है–आज उर्दू के नाम पर 15 मिनट का बुलेटिन होता है, चाहे वह रेडियो हो, चाहे दूरदर्शन हो–ये सारी बातें, जो उर्दू के साथ नाइंसाफियां हो रही हैं, उन सब चीजों को देखना होगा। यहां हमारे शिक्षा मंत्री जी मौजूद हैं। बिहार में उर्दू के बारे में बहुत कुछ हमारे दूसरे साथियों ने कहा है। यह सही है कि बहुत लम्बे अरसे के बाद उर्दू को उसका हक बिहार में पहले 1980 में मिला लेकिन यह बात सही है कि अगर उर्दू को हमें फरोग देना है, उर्दू को हमें आगे बढ़ाना है तो जब तक प्राइमरी लैवल पर, क्योंकि आज जब हम अपने इलाके में घूमते हैं तो आम शिकायत यह मिलती है कि प्राइमरी स्कूल में कहीं उर्दू टीचर नहीं हैं, उर्दू टीचर के नाम पर वहां कोई बहाली नहीं हो रही है। उन्होंने बहुत ठीक कहा कि 15-20 सालों में उर्दू टीचर की कोई बहाली नहीं हो रही और जो उर्दू पढ़ना चाहते हैं, उनकी ख्वाहिश है, उनके गार्जियन की ख्वाहिश होती है कि अपने बच्चों को मादरी ज़ुबान में हम पढ़ाएं लेकिन उर्दू टीचर मुहैया न होने की वजह से उनको दूसरा ऑप्शन लेना पड़ता है इसलिए मैं समझता हूं कि यह बात बहुत ही जरुरी है। जहां तक गुजराल रिकमेंडेशन की बात सोज साहब ने कही है कि आखिर उस रिकमेंडेशन का सरकार ने क्या किया? हम चाहेंगे कि मंत्री जी और सरकार उस रिकमेंडेशन को निकाले जो कोल्ड स्टोरेज में पड़ा हुआ है और निकालकर उसको फिर से देखने की कोशिश करनी चाहिए कि आखिर हम जो कमेटी बनाते हैं, कमीशन बनाते हैं, उसके रिकमेंडेशन की कोई हैसियत है या नहीं, उसकी कोई कद्र है या नहीं। इसलिए हम चाहेंगे कि उर्दू के बारे में ऐसी जो भी रिकमेंडेशन हैं, उनको निकाल कर देखना चाहिए। नेशनल काउंसिल फार प्रोमोशन आफ उर्दू लैंग्वेज की बातें अभी लोगों ने कही हैं। आज आप यह समझिए कि एक तरह से वह पराया लगभग मर चुका है, उसका कोई चेयरमैन नहीं है, उसकी कोई देख-भाल करने वाला नहीं है। जिस मकसद के लिए उसको बनाया गया था, उस मकसद को पूरा करने की कोशिश नहीं हुई। इसलिए मेरा यही कहना है कि आखिर में सब लोगों ने शेर सुनाया है, तो मैं भी एक शेर सुनाता हूं... (व्यवधान)..

श्री उपसभापति: शेर के बिना उर्दू नहीं।...(व्यवधान)... इसके बिना उद्रू के ऊपर बहस नहीं हो सकती है।

श्री तारिक अनवर: 'वक्त आने पर ज़ुबान छीन ली तुमने हमसे,
अब हमें और मिटाने के लिए जरूरत क्या है।'

सही मायनों में उर्दू की यही दासतां है। पिछले पचास सालों से जो उर्दू के साथ नाइंसाफियां होती रही हैं। आज हम पार्लियामेंट में इस पर बहुत संजीदगी से गौर कर रहे हैं, यह बहुत अच्छी बात है, लेकिन जैसा दूसरे लोगों ने कहा कि यह सिर्फ गुफ्तगूह तक ही न रहे, क्योंकि अमली तौर सरकार आगे आए। यूपीए ने अपने कॉमन मिनिमम प्रोग्राम में इसको शामिल किया है कि उर्दू को फरोक दिया जाए, तो मैं समझता हूं कि सरकार को संजीदगी के साथ, इस पर कोई कदम उठाना चाहिए।

श्री उपसभापति: श्री राशिद अल्वी। जो ऑनरेबल मैम्बर्स हैं, मैं उनसे गुजारिश करुंगा कि वे वक्त का ख्याल रखें। जो कुछ भी उर्दू के बारे में कहना था, वह सब कहा गया है। इसलिए सब वक्त का ख्याल रखें।

श्री राशिद अल्वी (आंध्र प्रदेश): सर, आपका बहुत शुक्रिया कि आपने मुझे बोलने के लिए वक्त दिया। जब भी उर्दू की बहस शुरू होती है, सबसे पहले तो यह साबित करने की कोशिश की जाती है कि यह सिर्फ मुसलमानों की जुबान नहीं है। उसके लिए तरह-तरह के आगर्युमेंट्स दिए जाएंगे कि यह हिन्दुस्तान की जुबान है। मैं बचपन से यह बहस सुनता आ रहा हूं, लेकिन शायद आज तक यह बात कंवीन्स नहीं हो पाई। यह जुबान सिर्फ एक कौम की नहीं है, यह पूरे मुल्क की जुबान है। यह जुबान उससे भी आगे की है। इस जुबान ने हिन्दुस्तान की जंगे आज़ादी की लड़ाई लड़ी थी, सिर्फ इन्कलाब ज़िंदाबाद जैसा नारा नहीं दिया। दुनिया में एक भी जुबान ऐसी नहीं है, मैं पूरे यकीन के साथ कह सकता हूं कि जो इन्कलाब ज़िंदाबाद के नारे को बदल सके। इन्कलाब जिन्दाबाद की ताकत ने इस मुल्क को आजाद कराया है। यह जुबान सिर्फ हिन्दुस्तान की जुबान नहीं है। राकेश शर्मा जब आसमान की बुलंदियों से आगे आए, इकबाल ने कहा थे कि सितारों से आगे जहां और भी हैं और जब राकेश शर्मा ने मिसेज गांधी से टेलीफोन पर बात की, तो मिसेज गांधी ने इधर से जवाब दिया कि मैं हिन्दोस्तान देख रही हूं, 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा', आसमान की बुलंदियों से आगे यह जुबान चली गई। लेकिन यह बदकिस्मती है कि जिस धरती में, जिस गंगा-यमुना की जमीन में, यह जुबान पैदा हुई थी, पली-बढ़ी और जवान हुई थी, वहीं पर अब यह जुबान आहिस्ता-आहिस्ता खत्म होती जा रही है। सर, मैं इस हाउस को बताना चाहूंगा कि रामायण और महाभारत के 700 तर्जुमे उर्दू के अंदर हैं। दुनिया की कोई भी जुबान यह मिसाल पेश नहीं कर सकती है। महाभारत, गीता और रामायण के 700 तर्जुमे हैं। गायत्री मंत्र का तर्जुमा, उर्दू जुबान के अंदर, नज्म के अंदर और नसर के अंदर भी है। यह ऐसी जुबान है, एक सैकुलर जुबान है, सर वक्त ज्यादा नहीं है। मैं कहना चाहूंगा कि जब पूरे मुल्क के अंदर आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी, तो महात्मा गांधी ने यह जामिया युनिवर्सिटी बनाई थी। उन्होंने एक ऐसी युनिवर्सिटी बनाई थी, जिसके अंदर बच्चों को अपनी जुबान में दर्स दिया जाएगा। एक ऐसी युनिवर्सिटी जिसके अंदर अपनी तहजीब और अपनी तम्मुदुन के अंदर रहकर आने वाली नस्ल को तैयार किया जाएगा। मैं सरकार से कहना चाहूंगा कि बदकिस्मती की बात यह है कि उर्दू को हम और कहां तरक्की देंगे, खुद उस युनिवर्सिटी के अंदर जिस युनिवर्सिटी को महात्मा गांधी ने बनाया था, जिसके कवानीन में आज भी लिखा है कि इस युनिवर्सिटी में उर्दू में तालीम दी जाएगी। इस युनिवर्सिटी का मीडियम उर्दू होगा। आज वहां उर्दू जानने वालों की तादाद बहुत कम है। मैं सरकार से कहूंगा कि कम से कम इतना करे कि उस जामिया युनिवर्सिटी को, जिसकी एक तारीख है, मैं तारीख के पन्ने पलटना शुरू करूंगा तो बहुत वक्त हो जाएगा, आप इतना वक्त देंगे भी नहीं।

श्री उपसभापति: इतना वक्त नहीं है।

श्री राशिद अल्वी: इसलिए मैं कहूंगा कि उस जामिया यूनिवर्सिटी को रिवाइव कीजिए कि वहां पर उर्दू ठीक तरह से पढ़ाई जा सके। महोदय, चार-पांच स्टेट के अंदर पिचासी फीसदी उर्दू जानने वाले लोग रहते हैं। उन स्टेट्स के अंदर उर्दू की फरोख़ के लिए कुछ नहीं किया जा रहा है। सर, मैं कहना चाहूंगा कि फाइनेंस मिनिस्टर ने बजट स्पीच में कहा था कि हम उर्दू के फरोख़ के लिए स्टेट गवर्नमेंट्स को पैसा दे रहे हैं। मैं सरकार से कहूंगा कि सिर्फ पैसा देना ही काफी नहीं है। यह भी देखना पड़ेगा कि उस पैसे का सही इस्तेमाल हो रहा है कि नहीं हो रहा है। ...(व्यवधान)...

श्री शाहिद सिद्दिकी: पैसा दिया कहां है?

†[شری شاہد صدیقی : پیسہ دیا کہاں ہے؟]

श्री राशिद अल्वी: मेरे ख़याल से यू.पी. को नहीं दिया होगा।

श्री शाहिद सिद्दिकी: किसी को नहीं दिया, अलोकेशन किया ही नहीं है। बजट में एलोकेशन ही नहीं है।

†[شری شاہد صدیقی : کسی کو نہیں دیا، ایلوکیشن کیا ہی نہیں۔ بجٹ میں ایلوکیشن ہی نہیں ہے۔]

श्री राशिद अल्वी: ऐसा है कि हम लोग यू.पी. सरकार पर भरोसा नहीं करते, उन्हें देते किसी और काम के लिए हैं और वे खर्च किसी और पर कर देते हैं।

श्री शाहिद सिद्दिकी: बिहार को दे दें, महाराष्ट्र को दे दें, इनकी सरकार पर भरोसा है ... (व्यवधान)...

†[شری شاہد صدیقی : بہار کو دیدیں، مہاراشٹر کو دی دیں، ان کی سرکاروں پر بھروسہ ہے......مداخلت......]

श्री उपसभापति: देखिए, शाहिद सिद्दिकी साहब, अगर इस बहस में पड़ेंगे तो उर्दू की ख़िदमत नहीं होगी।

श्री शाहिद सिद्दिकी: वे इस तरह की बात ही क्यों कहते हैं ...(व्यवधान)... वे इल्ज़ाम लगा रहे हैं कि पैसा नहीं दिया ...(व्यवधान)... बजट में एलोकेशन ही नहीं है ...(व्यवधान)...

†[شری شاہد صدیقی : وہ اس طرح کی بات ہی کیوں کہتے ہیں......مداخلت...... وہ الزام لگا رہے ہیں کہ پیسہ نہیں دیا ہے......مداخلت...... بجٹ میں ایلوکیشن ہی نہیں ہے......مداخلت......]

††[ ] Transliteration in Urdu Script.

श्री उपसभापति: ठीक है, ये आपके विचार हैं, वे उनके विचार हैं ...(व्यवधान)... बोलने दीजिए ...(व्यवधान)...

श्री शाहिद सिद्दिकी: क्यों कहा ...(व्यवधान)...

[شری شاہد صدیقی : کیوں کہا... مداخلت.......]

श्री राशिद अल्वी: मैं बड़े अदब से एक बात कहना चाहता हूं शाहिद सिद्दिकी जी कि आप इस राज्य सभा के हाउस में जितना* रहे हैं, अगर इतना* के सामने* कह दें, तो उर्दू का कुछ काम यू. पी. में हो जाएगा।

श्री शाहिद सिद्दिकी: ठीक है, अब आप* लीजिए और* और* से उर्दू का काम करवा लीजिए।

†[شری شاہد صدیقی ٹھیک ہے اب آپ * لیجئے اور * اور * سے اردو کا کام کروا لیجئے۔]

श्री उपसभापति: अल्वी साहब, आपको उर्दू के बारे में जो सवाल करना है वह कीजिए। यह हाफ एण्ड ऑवर डिसकशन है ...(व्यवधान)... ठीक है ...(व्यवधान)...

श्री शाहिद सिद्दिकी: *ने क्या किया उर्दू के लिए ...(व्यवधान)...

†[شری شاہد صدیقی : * نے کیا کیا اردو کے لئے .... مداخلت.......]

श्री मंगनी लाल मंडल (बिहार): महोदय, ' असंसदीय है ...(व्यवधान)...

श्री राशिद अल्वी: सर, बात' की नहीं है ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: आप इस पर तवज्जो मत दीजिए ...(व्यवधान)... इसे खत्म कीजिए, आप अपने प्वाइन्ट्स पर आइए।

श्री राशिद अल्वी: मैं तो भूल ही गया। उर्दू की बात की जाए और बदतहजीबी की जाए तो यह उर्दू की मफात के खिलाफ है। इसलिए मैं उस बदतहजीबी को माफ करता हूं, जो* जैसी अज़ीम शख्सियत के बारे में यहां कही जा रही है।

---

*Expunged as ordered by the Chair.

††[ ] Transliteration in Urdu Script.

श्री उपसभापति: आप लीडर्स के नाम निकाल दीजिए। यह सही नहीं है।

श्री राशिद अल्वी: यह बिल्कुल मुनासिब नहीं है। उत्तर प्रदेश के अंदर जिस यूनिवर्सिटी का जिक्र किया जा रहा है ...(व्यवधान)...

श्री शाहिद सिद्दिकी: आप बिहार पर बात कीजिए, बहस बिहार के ऊपर है ...(व्यवधान)... आपने बिहार ...(व्यवधान)... का नाम नहीं लिया ...(व्यवधान)... क्या कर रहे हैं आप ...(व्यवधान)... सर ...(व्यवधान)...

†[شری شاہد صدیقی : آپ بہار پر بات کیجئے بحث بہار کے اوپر ہے ......مداخلت...... آپ نے بہار ......مداخلت.....کا نام نہیں لیا.....مداخلت.....کیا کر رہے ہیں آپ.....مداخلت..... سر.......مداخلت]

SHRI A. VIJAYARAGHAVAN (Kerala): Sir, I am on a point of order. this is Half-an-Hour discussion. As far as our Rule Book is concerned, there is some criterion laid down for this. Now, that is beign violated. So, I want a ruling from the Chair.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, it is okay. आप कंट्रोवर्सी में मत जाइए, उर्दू के बारे में बोलिए, अगर उर्दू की ख़िदमत करनी है जो उर्दू के बारे में बोलिए।

श्री राशिद अल्वी: सर, मैं फिर सजेशन्स दे रहा हूं और इसमें यह कहना चाहता हूं कि अगर उर्दू जबान को रोजगार से जोड़ा जाएगा, तभी उर्दू की तरक्की होगी। इसके अलावा और कोई दूसरा रास्ता उर्दू को तरक्की देने का नहीं है। थानों के अंदर एफ.आई.आर. उर्दू ज़बान में होती थी। जितने रेवेन्यू रिकार्ड्स हैं, वे भी उर्दू में होते थे। वे इसलिए होते थे, क्योंकि मुगलिया दौर के अंदर जब मुगल बादशाह यहां आए तो पर्शियन जबान थी, फिर उर्दू जबान हुई। उर्दू का ताल्लुक रोजगार से था, तो इस मुल्क के अंदर उर्दू समझी भी जाती थी, लिखी भी जाती थी, रोजगार भी मिलता था। अगर सरकार उसी रोजगार से इस जबान को जोड़गी तो उर्दू को कोई फायदा होगा। मैं सरकार से यह भी कहूंगा कि सरकार ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: सवाल पूछिए।

श्री राशिद अल्वी: मैं सवाल पूछ रहा हूं कि क्या सरकार स्टेट गवर्नमेंट को ऐसी डायरेक्शन दे रही है...। उर्दू के नाम पर जो स्टेट नई-नई यूनिवर्सिटीज़ बना रही हैं और इसमें जिद कर दिया है कि सारी उम्र के लिए एक प्रो-वाइस चांसलर बनाया जाए। इसकी वजह से यूनिवर्सिटीज़ नहीं बन पाती हैं। क्या सरकार इस तरीके की कोई डाइरेक्शन दे रही है कि ऐसी कोई जिद नहीं लगाई जाए? दूसरी बात मैं सरकार से कहना चाहूंगा कि जो नेशनल काउंसिल फॉर प्रोमोशन ऑफ उर्दू लैंग्वेज है, उसको सरकार क्या इस तरीके की डाइरेक्शन देगी कि जो पैसा उसको उर्दू की किताबें छापने के लिए दिया जा रहा है, वह उर्दू के फरोग के लिए उसका इस्तेमाल करे? साहित्यिक एकेडमी वगैरह, जहां पर सिर्फ चन्द लोगों ने अपना कब्ज कर रखा है, उसके ऊपर सरकार तवज्जह दे और उर्दू के फरोग के लिए उस पैसे का इस्तेमाल होना चाहिए। (समय की घंटी)

††[ ] Transliteration in Urdu Script.

सर साहित्यिक एकेडमी ने शेख अब्दुल्ला साहब पर एक किताब, उनकी सवानेह, हयात लिखी, मैं मंत्री जी की नालेज में लाना चाहता हूं कि किताब जिन साहब ने लिखी, उनका नाम है यूसुफ टैंग साहब। हमारे सोज साहब यहां तशरीफ रखते हैं। साहित्यिक एकेडमी ने ईनाम बजाय उस आदमी को देने के, जिसने उर्दू में वह किताब लिखी है, ईनाम शेख अब्दुल्ला साहब को दे दिया। मैं उनका बड़ा एहतराम करता हूं, शेख अब्दुल्ला साहब बड़े हैं, लेकिन ईनाम तो उस आदमी को मिलेगा, जिसने यह किताब लिखी है। मैं सरकार से कहूंगा कि वह इस पर तवज्जह दे। एनसीईआरटी ने अभी तक किताबें शाइर नहीं की हैं, बहुत से लोगों ने इस पर आब्जेक्शन किया है, उस पर तवज्जह देने की जरूरत है। ...(व्यवधान)...

प्रो॰ सैफुद्दीन सोज: रेकार्ड में गलत बात जा रही है। वह शेख साहब की सवानेह हयात है, शेख साहब के अलफाज हैं, मोहम्मद यूसुफ टैंग जो हैं, वे उसके लेखक थे, वे लिख रहे थे, मगर बोल रहे थे शेख मोहम्मद अब्दुल्ला। ...(व्यवधान)...

†[پروفیسر سیف الدین سوز: ریکارڈ میں غلط بات جا رہی ہے۔ وہ شیخ صاحب کی سوانح حیات ہے، شیخ صاحب کے الفاظ ہیں، محمد یوسف ٹینگ جو ہیں وہ اس کے لیکھک ہیں، وہ لکھ رہے تھے مگر بول رہے تھے شیخ محمد عبداللہ۔]

श्री राशिद अल्वी: हां, मैं वही तो कह रहा हूं कि जिसने लिखी है, उसी को मिलना चाहिए न। ...(व्यवधान)...

प्रो॰ सैफुद्दीन सोज: यह यूसुफ टैंग की किताब नहीं है। ...(व्यवधान)...

†[پروفیسر سیف الدین سوز: یہ یوسف ٹینگ کی کتاب نہیں ہے۔]

श्री राशिद अल्वी: चलिए, मैं इस बहस में नहीं जाना चाहता। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: बहस में मत जाइए, इस बहस को खत्म करना है, क्योंकि आठ बज गए हैं।

श्री राशिद अल्वी: तो मेरी यही दरख्वास्त है और मैं मंत्री जी से यही पूछना चाहता हूं कि उर्दू की तरक्की के लिए जो सरकार के इन्तजामात हैं, उनको बताएं कि आइन्दा क्या करेंगे? जफर का एक शेर है।

†[ ] Transliteration in Urdu Script.

श्री उपसभापतिः बोल दीजिए।

श्री राशिद अल्वीः बात करनी मुझे मुश्किल, कभी ऐसी तो न थी, जैसी अब है तेरी महफिल, कभी ऐसी तो न थी।

श्री अबू आसिम आजमी (उत्तर प्रदेश): मैं डिप्टी चेयरमैन साहब का बहुत शुक्रिया अदा करता हूं कि बिहार में उर्दू के ऊपर आज डिसकशन में मुझे बोलने का मौका दिया। मैं सिर्फ बिहार पर ही नहीं, बल्कि पूरे हिन्दुस्तान में उर्दू की बात करूंगा। हिन्दुस्तान की तहजीब, तमद्दुन, अखलाक, प्यार, मुहब्बत का नाम है उर्दू। यह वह जुबान है, जिसका वतन हिन्दुस्तान है। पैदाइश है, जो सेकुलर है। हिन्दुस्तानी कल्चर की उम्दा मिसाल है, इसके ताने-बाने संस्कृत, ब्रज भाषा, अवधी, पंजाबी, मराठी, गुजराती, तेलुगु, बंगाली, फारसी, तुर्की, पश्तो और अंग्रेजी से भी मिलते हैं। इसलिए आज अपने मुल्क में बेमिसाल शिकार होने के बावजूद भी यह जुबान सारे जहान में अपनी एक जगह बना चुकी है। मैं आज यह तमाम लोगों से कहना चाहता हूं कि हम लोग यहां मिल कर बैठे हैं उर्दू के फरोग की बात करने के लिए तो हम सच्चाई पर क्यों नहीं आते? हम लोग अपनी-अपनी पार्टियां देख कर अपने लीडरों को खुश करने की बात करते हैं। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापतिः आप फिर बहस मत कीजिए, आप उर्दू के बारे में बोलिए।

श्री अबू आसिम आजमीः मैं उर्दू के बारे में बोल रहा हूं, उर्दू की हालत पर जब तक मैं नहीं बोलूंगा, तो कैसे चलेगा। 1947 में आजादी के वक्त उर्दू का बहुत चलन था। अभी बहुत सारे साथियों ने कहा कि 15-20-25 साल पहले अदालतों में उर्दू में काम होता था, पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज होती थी। उसी तरह से मैं कहूं कि 1947 में मुसलमानों को 28 परसेंट से 56 परसेंट तक नौकरियां मिली थीं। उसके बाद उर्दू और मुसलमान दोनों को एक तरह से देखा गया। किसी सरकार थी? मैं तो चाहता हूं कि यह कहूं कि *यह लोगों ने किया है, लेकिन कैसे कहूं? क्या* लोगों की सरकार थी? मैं कहना चाहता हूं, लेकिन जो लोग अपने आपको सेकुलर कहते हैं, हमारे पुरखों ने बड़ी-बड़ी गलतियां की हैं, जो आज हम इस सदन में बैठ कर उर्दू पर चर्चा कर रहे हैं। इससे बड़े अफसोस की बात और कुछ नहीं हो सकती।

जिन्हें हम हार समझे थे, गला अपना सजाने को वही अब सांप बन बैठे, हमीं को काट खाने को।

भाई साहब खड़े होकर समाजवादी पार्टी के मुलायम सिंह यादव की बात कर रहे हैं कि उर्दू का कुछ नही हो रहा है। मैं कहना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश में 15 हजार लोगों को उर्दू के टीचर्स पर तैनात किया गया है।

---

*Expunged as ordered by the Chair.

आज भी उर्दू के टीचरों की भर्ती हो रही है। मुझे लोग मिल रहे हैं कि जरा सिफारिश कर दीजिए, उर्दू के टीचरों की भर्ती करवा दीजिए। मैं यह कहना चाहता हूं कि आज सबसे पहले तो उर्दू का सबसे बड़ा मसला कौमी जुबान या नेशनल लैंग्वेज का है। इस जुबान की शिनाख्त खत्म हो रही है और हिंदी का नाम पर उर्दू का कुर्बान किया जा रहा है। मैं समझता हूं कि उर्दू, हिंदी की सगी बहन है। ये दोनों सगी बहनें हैं। ये दो खूबसूरत जिस्म की दो आंखें हैं। कुछ लोग उसकी एक आंख खराब करके उस खूबसूरत जिस्म को बदसूरत कर देना चाहते हैं। जब तक उर्दू, हिंदी यानी एक जिस्म की दो बहनों को महफूज नहीं रखा जाएगा, यह मुल्क हिंदुस्तान सेकुलर नहीं रह सकता। यह खूबसूरत चेहरा बदनुमा दाग बन जाएगा। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि आज उर्दू के फरोग के लिए, उर्दू ने जो कुछ किया है, "इंकलाब जिंदाबाद" का नारा देकर हारी हुई फौजों में जो जोश पैदा किया गया, क्या उसे लोग भूल गए? आज जब भी 15 अगस्त या 26 जनवरी आता है, बैंड बजता है "सारे जहां से अच्छा, हिंदोस्तां हमारा, हम बुलबुले हैं इसके, ये गुलिस्तां हमारा" मैं जानना चाहता हूं कि यह शेर किसका लिखा हुआ है? यह कौन सी जुबान का शेर है? उसे हम भूल गए? इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि जो उर्दू को मुसलमान से जोड़ते हैं और कहते हैं कि यह मुसलमानों की जुबान है, यह उर्दू के साथ बिल्कुल नाइंसाफी है। उर्दू को पाकिस्तानी जुबान कहा जा रहा है, विदेशी जुबान कहा जा रहा है, मुल्क की तकसीम में उर्दू का हिस्सा है, लेकिन आज उस पर इस तरह का इल्जाम लगाया जा रहा है। ये गलतफहमियां पैदा की जा रही हैं। आजादी में उर्दू जुबान का contribution आज की नई नस्ल को नहीं बताया जा रहा है। आज नयी नस्ल को हमें यह बताने की जरूरत है कि देश की आजादी में उर्दू जुबान का contribution कितना है। उर्दू सहाफत का किरदार जंगे आजादी में क्या रहा है, इन सब चीजों को हमें आज उन्हें बताने की जरूरत है। उर्दू शायर मुनीर शिकोहाबादी को इंकलाबी होने के जुर्म में काले पानी की सजा दी गयी। यह उर्दू शायरी का, उर्दू अदब का दर्जा इस मुल्क में रहा है, लेकिन आज इसी मुल्क में उर्दू के साथ जो कुछ किया जा रहा है, वह परेशानी का कारण है। इसलिए मैं आज यह मांग करना चाहता हूं कि जिस तरह से सिर्फ कश्मीर में उर्दू को स्टेट की जुबान बनाया गया है, इसी तरह पूरे हिंदुस्तान में हिंदी official language के बाद दूसरी जुबान national language उर्दू को बनाया जाए, यह मैं demand करना चाहता हूं। पूरे मुल्क में फैली हुई इलाकाई जुबानों की तरह किसी एक सूबे में सिमटी हुई उर्दू नहीं चाहिए क्योंकि यह दस्तूरी गारंटी के तहत मुराआत, फंड हासिल करने की तदरीसी तालीम के मसाइल हल करने की सहाफत और तबायत के मसाइल हल करने की बड़ी रुकावट बन रहा है। जुगराफियाई हुदूद से हटकर एक खुसीसी मामले के तौर पर उर्दू को और उर्दू वालों को पक्के सहूलियात से महरूम किया जा रहा है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं और आपके सामने एक मिसाल देना चाहता हूं, एक नॉन-मुस्लिम शायरा है उसने नज्म में लिखा है, "यहीं पे जन्मी और यहीं पर पली, यहीं का है फूल और यहीं की कली, यहीं पर जवान हुई, फूली और फली, खुशबुओं की

डालियों में बैठकर जो चली, तुझे चाहे हिंद की आवाम ए उर्दू, तुझे नई सदी का सलाम ए उर्दू।'' इसलिए मैं आज आपके सामने यह मांग करता हूं कि जहां मुल्क के तमाम मदरसों की तालीमी जुबान उर्दू है, इस हकीकत से उर्दू को एक हद तक जिंदा रखा है, जरूरत अहम मदारिस की डिग्रियां सरकार तस्लीम करे और डिग्रियों के लिहाज से मदारिस के फारगीन को सरकारी नौकरियों में जगह दे। यह उर्दू की एक बड़ी खिदमत होगी। इसी के साथ यह भी जरूरी है कि उर्दू के नाम पर हुकूमत ने जो इदारे कायम कर रखे हैं, उसका मुहासिबा National Council for Promotion of Urdu Language भी...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: अब समाप्त कीजिए।

श्री अबू आसिम आजमी: एक ऐसा इदारा है जो उर्दू का काम कम और दूसरों का काम ज्यादा करता है। मसलन कम्प्यूटर बांटना, मदरसों के लिए अरबी किताबें तैयार करना वगैरा। अगर हुकूमत को ये काम करने हैं तो इसके लिए कोई दूसरा इदारा बनाना चाहिए। इसलिए आज मैं मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि आप यह आश्वासन दीजिए कि अगर उर्दू को मुसलमानों की जुबान कहा जा रहा है तो जाने दीजिए, आप भी तो मुसलमान हैं। कम-से-कम आप कह दीजिए, आप उस कुर्सी पर बैठे हैं, आज आप उर्दू के लिए कुछ कर के जाएंगे, जबकि उर्दू जुबान मुसलमानों की नहीं है।...(व्यवधान)...मैं क्या कह रहा हूं...(व्यवधान)...अरे भई, इलजाम लग रहा है कि जिस तरह से मुसलमान और उर्दू एक हैं...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: आजमी साहब, आप देखिए...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आजमी: फातमी साहब, आप कम-से-कम उठने के पहले आज बता दीजिए। आप इन्कलाबी आदमी हैं, मैं आपको बहुत दिनों से जानता हूं। ...(समय की घंटी)... आज आप कुछ ऐलान करके जाएंगे कि हां उर्दू के लिए पूरी कोशिश करेंगे। ...(व्यवधान)...लालू जी का बहुत दबाव है। ...(व्यवधान)...सुनिए न, साहब। लालू जी का बहुत दबाव भी है, बहुत पावर भी है।...(व्यवधान)...

†[شری ابو عاصم اعظمی ''اتر پردیش'' : میں ڈپٹی چیئرمین صاحب کا بہت شکریہ ادا کرتا ہوں کہ بہار میں اردو کے اوپر آج ڈسکشن میں مجھے بولنے کا موقع دیا۔ میں صرف بہار پر ہی نہیں، بلکہ پورے ہندستان میں اردو کی بات کرونگا۔ ہندستان کی تہذیب، تمدن، اخلاق، پیار، محبت کا نام ہے اردو۔

†Transliteration in Urdu Script.

یہ وہ زبان ہیک، جس کا وطن ہندستان ہے۔ پیدائش سے جو سیکولر ہے۔ ہندستانی کلچر کی عمدہ مثال ہے، اس کے تانے بانے، سنسکرتی، برج بھاشا، اودھی، پنجاب، مراٹھی، گجراتی، تیلگو، بنگالی، فارسی، ترکی، پشتو اور انگریزی سے بھی ملتے ہیں۔ اس لئے آج اپنے ملک میں بے مثال شکار ہونے کے باوجود بھی یہ زبان سارے جہان میں اپنی ایک جگہ بنا چکی ہے۔ میں آج یہ تمام لوگوں سے کہنا چاہتا ہوں کہ ہم لوگ یہاں مل کر بیٹھے ہیں اردو کے فروغ کی بات کرنے کے لئے تو ہم لوگ سچائی پر کیوں نہیں آتے؟ ہم لوگ اپنی اپنی پارٹیاں دیکھ کر اپنے لیڈروں کو خوش کرنے کی بات کرتے ہیں۔۔۔۔۔مداخلت۔۔۔۔۔

شری اُپ سبھاپتی : آپ پھر بحث مت کیجئے، آپ اردو کے بارے میں بولئے۔

شری ابوعاصم اعظمی : میں اردو کے بارے میں بول رہا ہوں، اردو کی حالت پر جب تک میں نہیں بولونگا، تو کیسے چلے گا۔ ۱۹۴۷ میں آزادی کے وقت اردو کا بہت چلن تھا۔ ابھی بہت سارے ساتھیوں نے کہا کہ ۲۵۔۲۰۔۱۵ سال پہلے عدالتوں میں اردو میں کام ہوتا تھا، پولیس اسٹیشن میں ایف آئی آر درج ہوتا تھا۔ اسی طرح سے میں کہوں کہ ۱۹۴۷ میں مسلمانوں کو ۲۸ فیصد سے ۵۶ فیصد تک نوکریاں ملی تھیں۔ اس کے بعد اردو اور مسلمان دونوں کو ایک طرح سے دیکھا گیا۔ کس کی سرکار تھی؟ میں تو چاہتا ہوں کہ یہ کہوں کہ یہ (*) لوگوں نے کیا ہے، لیکن کیسے کہوں؟ کیا (*) لوگوں کی سرکار تھی؟ میں کہنا چاہتا ہوں، لیکن جو لوگ اپنے آپ کو سیکولر کہتے ہیں، ہمارے پرکھوں نے بڑی بڑی غلطیاں کی ہیں، جو آج ہم اس سدن میں بیٹھ کر اردو پر چرچہ کر رہے ہیں۔ اس سے بڑے افسوس کی بات اور کچھ نہیں ہو سکتی۔

جنہیں ہم ہار سمجھے تھے، گلا اپنا سجانے کو
وہی اب سانپ بن بیٹھے، ہمیں کو کاٹ کھانے کو

(*) Expunged as ordered by the Chair.

بھائی صاحب کھڑے ہوکر سماجوادی پارٹی کے ملائم سنگھ یادو کی بات کررہے ہیں کہ اردو کا کچھ نہیں ہورہا ہے۔ میں کہنا چاہتا ہوں کہ اتر پردیش میں ۱۵ ہزار لوگوں کو اردو ٹیچرس پر تعینات کیا گیا ہے۔ آج

بھی اردو کے ٹیچروں کی بھرتی ہورہی ہے۔ مجھے لوگ مل رہے ہیں کہ ذرا سفارش کردیجئے، اردو کے ٹیچروں کی بھرتی کروادیجئے۔ میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ آج سب سے پہلے تو اردو کا سب سے بڑا مسئلہ قومی

زبان یا نیشنل لینگویج کا ہے۔ اس زبان کی شناخت ختم ہورہی ہے اور ہندی کے نام پر اردو کو قربان کیا جارہا ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ اردو، ہندی کی سگی بہن ہے۔ یہ دونوں سگی بہنیں ہیں۔ یہ دو خوبصورت جسم کی

دو آنکھیں ہیں۔ کچھ لوگ اس کی ایک آنکھ خراب کر کے اس خوبصورت جسم کو بدصورت کردینا چاہتے ہیں۔ جب تک اردو، ہندی یعنی ایک جسم کی دو بہنوں کو محفوظ نہیں رکھا جائے گا، وہ ملک ہندوستان سیکولر

نہیں رہ سکتا۔ یہ خوبصورت چہرہ بدنما داغ بن جائے گا۔ اس لئے میں کہنا چاہتا ہوں کہ آج اردو کے فروغ کے لئے، اردو نے جو کچھ کیا ہے، ''انقلاب زندہ باد'' کا نعرہ دیکر ہاری ہوئی فوجوں میں جو جوش پیدا کیا

گیا، کیا اسے لوگ بھول گئے؟ آج جب بھی ۱۵ اگست یا ۲۶ جنوری آتا ہے، بینڈ بجتا ہے، ''سارے جہاں سے اچھا ہندوستاں ہمارا، ہم بلبلیں ہیں اس کی یہ گلستاں ہمارا'' میں جاننا چاہتا ہوں کہ یہ شعر کس کا

لکھا ہوا ہے؟ یہ کون سی زبان کا شعر ہے؟ اسے ہم بھول گئے؟ اس لئے میں کہنا چاہتا ہوں کہ جو لوگ اردو کو مسلمان سے جوڑتے ہیں اور کہتے ہیں کہ یہ مسلمانوں کی زبان ہے، یہ اردو کے ساتھ بالکل ناانصافی

ہے۔ اردو کو پاکستانی زبان کہا جارہا ہے، ودیشی زبان کہا جارہا ہے، ملک کی تقسیم میں اردو کا حصہ ہے، لیکن آج اس پر اس طرح کا الزام لگایا جارہا ہے۔ یہ غلط فہمیاں پیدا کی جارہی ہیں۔ آزادی میں اردو زبان کا contribution آج کی نئی نسل کو نہیں بتایا جارہا ہے۔ آج نئی نسل کو ہمیں یہ بتانے کی ضرورت ہے

کہ دیش کی آزادی میں اردو زبان کا contribution کتنا ہے۔ اردو صحافت کا کردار جنگ آزادی میں کیا

رہا ہے، ان سب چیزوں کو ہمیں آج انہیں بتانے کی ضرورت ہے۔ اردو شاعر منیر شکوہ آبادی کو انقلابی ہونے کے جرم میں کالے پانی کی سزا دی گئی۔ یہ اردو شاعری کا، اردو ادب کا درجہ اس ملک میں رہا ہے۔

لیکن آج اسی ملک میں اردو کے ساتھ جو کچھ کیا جا رہا ہے، وہ پریشانی کی وجہ ہے، اس لئے میں آج یہ مانگ کرنا چاہتا ہوں کہ جس طرح سے صرف کشمیر میں اردو کو اسٹیٹ کی زبان بنایا گیا ہے، اسی طرح پورے

ہندستان میں ہندی official language اردو کو بنایا جائے، یہ میں مانگ کرنا چاہتا ہوں۔ پورے ملک میں پھیلی ہوئی علاقائی زبانوں کی طرح کسی ایک صوبے میں سمٹی ہوئی اردو نہیں چاہئے کیونکہ یہ دستوری گارنٹی کے تحت مراعات، فنڈ حاصل کرنے کی تدریس وتعلیم کے مسائل حل کرنے کی صحافت اور طباعت کے مسائل حل کرنے کی بڑی رکاوٹ بن رہا ہے۔ جغرافیائی حدود سے ہٹ کر ایک خصوصی معاملے کے طور پر اردو کو اور اردو والوں کو کئی سہولیات سے محروم کیا جا رہا ہے۔ اس لئے میں کہنا چاہتا ہوں اور آپ کے سامنے ایک مثال دینا چاہتا ہوں، ایک نان مسلم شاعرہ ہے، اس نے نظم میں لکھا ہے

یہیں پہ جنمی ہے اور یہیں پہ پلی
یہیں کا ہے پھول اور یہیں کی کلی
یہیں پر جوان ہوئی، پھولی اور پھلی
خوشبوؤں کی ڈالیوں میں بیٹھ کر جو چلی
تجھے چاہے، ہند کی عوام اے اردو
تجھے نئی صدی کا سلام اے اردو

اس لئے میں آج آپ کے سامنے یہ مانگ کرتا ہوں کہ جہاں ملک کے تمام مدرسوں کی تعلیمی زبان اردو ہے، اس حقیقت سے اردو کو ایک حد تک زندہ رکھا ہے، ضرورت اہم مدارس کی ڈگریاں سرکار تسلیم کرے

اور ڈگریوں کے لحاظ سے مدارس کے فارغین کو سرکاری نوکریوں میں جگہ دے۔ یہ اردو کی ایک بڑی خدمت ہوگی۔ اس کے ساتھ یہ بھی ضروری ہے کہ اردو کے نام پر حکومت نے جو ادارے قائم کر رکھے ہیں، اس کا محاسبہ National council for promotion of urdu language ......مداخلت......

شری اُپ سبھا پتی: اب سمابت کیجئے۔

شری ابوعاصم اعظمی : ایک ایسا ادارہ ہے جو اردو کا کام کم اور دوسروں کا کام زیادہ کرتا ہے۔ مثلاً کمپیوٹر بانٹنا، مدرسوں کے لئے عربی کتابیں تیار کرنا وغیرہ۔ اگر حکومت کو یہ کام کرنے ہیں تو اس کے لئے کوئی دوسرا ادارہ بنانا چاہئے۔ اس لئے آج میں منتری جی سے کہنا چاہتا ہوں کہ آپ یہ آشواسن دیجئے کہ اگر اردو کو مسلمانوں کی زبان کہا جا رہا ہے تو جانے دیجئے، آپ بھی تو مسلمان ہیں۔ کم سے کم آپ کہہ دیجئے، آپ اس کرسی پر بیٹھے ہیں، آج آپ اردو کے لئے کچھ کر کے جائیں گے، جب کہ اردو زبان مسلمانوں کی نہیں ہے ۔ مداخلت ۔

میں کیا کہہ رہا ہوں .مداخلت . ارے بھئی الزام لگ رہا ہے کہ جس طرح سے مسلمان اور اردو ایک ہیں مداخلت ..

اُپ سبھا پتی : اعظمی صاحب آپ دیکھئے .مداخلت ...

شری ابوعاصم اعظمی : فاطمی صاحب، آپ کم سے کم اٹھنے سے پہلے آج بتا دیجئے۔ آپ انقلابی آدمی ہیں، میں آپ کو بہت دنوں سے جانتا ہوں . . آج آپ یہ اعلان کر کے جائیں کہ اردو کے لئے پوری کوشش کریں گے مداخلت . الویٰ کا بہت یاد ہے . مداخلت.. سنئے نہ صاحب۔ الویٰ تو بہت یاد بھی ہے، بہت یاد بھی ہے . . مداخلت

श्री उपसभापति: प्लीज, आप जरा जल्दी कन्क्लूड कीजिए...(व्यवधान)...यह ठीक नहीं है...(व्यवधान)...आप बोलिए।...(व्यवधान)...यह ठीक नहीं है।...(व्यवधान)...

डा॰ फागुनी राम (बिहार): माननीय उपसभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, बहुत अच्छा किया...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: आपके पास जो लिखित में है, उसे रख दीजिए। जो भी बोलना है ...(व्यवधान)...

डा॰ फागुनी राम: महोदय, मैं उसे नहीं बोलूंगा। मैंने तो पूरे आधा घंटा बोलने की तैयारी कर ली थी, लेकिन मैं समय देख रहा हूं, इसलिए मैं उतना नहीं बोलूंगा। मंत्री जी मुझे यह बताने की कृपा करें कि मुझे जहां तक जानकारी है कि मदरसे में तो उर्दू के स्कूल टीचर हैं ही, लेकिन गैर-मदरसे वाले में भी, जहां तक हमने पढ़ा है, उसके अनुसार हम जानते हैं कि सभी प्राइमरी, माध्यमिक और हाई स्कूलों में, कॉलेजों में, उर्दू के लिए टीचर अवश्य हैं।...(व्यवधान)...

एक माननीय सदस्य: थे, आपके जमाने में थे, लेकिन अब नहीं हैं।...(व्यवधान)...

डा॰ फागुनी राम: हां थे, मैं जानता हूं।...(व्यवधान)...मैं कह रहा हूं...(व्यवधान)...अब मैं उनसे प्रार्थना करना चाहता हूं कि उर्दू के बारे में एक सर्वे करा लें और जहां-जहां उर्दू के छात्रों के जमाव का स्थान हैं, वहां-वहां उर्दू छात्रों के अनुपात में उर्दू शिक्षक रखे जाएं। मुझे जहां तक मालूम है कि बिहार में 8 जिले ऐसे हैं, जहां मुस्लिम भाइयों की काफी आबादी है, 15 परसेंट तो उनकी नैचुरल पोपुलेशन है, लेकिन 5 जिले ऐसे हैं, जहां उनकी आबादी 15 परसेंट से ज्यादा है। उसमें कटिहार भी आता है। हमारे तारिक अनवर साहब का जिला भी आता है। यहां पर 40-50 परसेंट हैं. ..(व्यवधान)...

श्री मंगनी लाल मंडल: तारिक साहब का जिला मुंगेर है।...(व्यवधान)...

डा॰ फागुनी राम: नहीं, गया जिला है, मैं जानता हूं। वे तो हमारे गया के रहने वाले हैं ...(व्यवधान)...आप नहीं जानते हैं, आप चुप रहिए। वे गया के रहने वाले हैं। हम इनके दादो के सम्पर्क में रहे हैं...(व्यवधान)...जो अरवल, तत्कालीन गया जिला में रहते थे...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: आप क्या पूछ रहे थे?

डा॰ फागुनी राम: महोदय, मैं वही कह रहा हूं कि ये एक सर्वे करा लें कि कितने लड़के उर्दू पढ़ने वाले हैं। जो स्केल है कि 20 या 40 छात्र पर एक उर्दू शिक्षक रखे जाएंगे, तो जहां जितने उर्दू छात्र हैं, उतने स्केल पर वहां उर्दू टीचर रखे जाते हैं, तो जहां उतने लड़के अवेलेबल हों, उनसे

आधे से भी ज्यादा अगर अवेलेबल हो जाते हैं, तो वहां पर उर्दू के शिक्षक अवश्य रखे जाएं। मैं यही कहना चाहता हूं।

दूसरी बात मैं यही कहना चाहता हूं कि उर्दू की किताबें और उर्दू के शिक्षक सुलभ होने चाहिए, क्योंकि उर्दू लैंग्वेज की बात तो तभी आएगी, जब उर्दू की पढ़ाई होगी। इसलिए अधिक-से-अधिक स्कूलों में उर्दू की पढ़ाई हो, जहां उर्दू छात्रों का कंसेंट्रेशन हो, जहां इनका पोपुलेशन हो। एक कोशिश अवश्य करें कि जो उर्दू पढ़ना चाहते हैं, वे शिक्षकों के अभाव में उर्दू नहीं पढ़ सके... **(समय की घंटी)**... ऐसी परिस्थिति नहीं आने दें, बल्कि उनके लिए उर्दू शिक्षकों का प्रबंध अवश्य कर दें।...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: ठीक है। मंडल जी...**(व्यवधान)**...

श्री फागुनी राम: महोदय, आपने बोलने का जो समय दिया, उसके लिए धन्यवाद। समय के अभाव के कारण मैं अपनी बात पूरी नहीं कर सका, मैं बाद में मंत्री जी को अपनी पूरी बात कहूंगा।

श्री उपसभापति: मंडल जी, आप बोलिए।

श्री मंगनी लाल मंडल: उपसभापति महोदय, धैर्य की सीमा होती है, मैं जानता हूं। । आपने मुझ पर कृपा की है कि मुझे बोलने का समय दिया है। मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा। शाहिद सिद्दिकी जी ने जो बातें कहीं हैं, उसमें उन्होंने थोड़ी राजनीति कर दी है। उन्होंने बहुत अच्छी बातें कहीं हैं। उन्होंने बहुत अच्छी तकरीर की है। फर्क यह है कि कल हमारे नेता थे आदरणीय मुलायम सिंह यादव जी, आज उनके नेता हैं, लेकिन मैं नेता में फर्क नहीं करता हूं क्योंकि आज हमारे नेता लालू जी हैं। लेकिन समाजवादी आन्दोलन के नेता मुलायम सिंह यादव जी को हम शत-शत नमन करते हैं, सलाम करते हैं।

महोदय, नेतृत्व और भाषा में अन्तर होता है। वे भी अच्छा करते हैं और हम भी अच्छा करते हैं। बिहार के मामले में उन्होंने कुछ बातें कहीं हैं, जिन्हें मैं यहां रख देना चाहता हूं। संविधान में 18 भाषाएं और मैथिली, डोगरी, बोडो आदि मिलाकर 22 भाषाओं का उल्लेख है। ये राष्ट्रीय भाषाएं हैं। कहा गया है कि हिन्दी सहित जितनी भाषाएं हैं, वे सारी भाषाएं राष्ट्रीय भाषाएं हैं। यह बात अलग है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता दी गई, लेकिन उर्दू के बारे में इन्होंने ठीक ही कहा और सारे वक्ताओं ने भी कहा कि ये दोनों सगी बहनें हैं और उर्दू तो भारत माता की कोख से जन्मी है, पैदा हुई है, इसलिए इसको हिन्दुस्तानी जुबान कहें, उर्दू कहें तो यह हमारी वैसी ही राष्ट्र भाषा है,

8.00 P.M.

राष्ट्रीय भाषा है, जैसी हिन्दी है। मैं इस मामले में, उर्दू के बारे में बहुत-ज्यादा नहीं कहना चाहूंगा। बहुत-से वक्ताओं ने कहा है कि हमारे इतिहास की जो धरोहर है, उसमें से एक उर्दू भाषा भी है और जो ऐतिहासिक उथल-पुथल हुआ है, उसका यह सिर्फ साक्ष्य ही नहीं है बल्कि उर्दू एक वाहिनी है। जिस तरह से प्राचीन इतिहास के लिए पाली, संस्कृत हमारी भाषा रही है, यदि आधुनिक भारत में से उर्दू को हटा दिया जाए तो उसके इतिहास को ठीक से नहीं लिखा जाएगा, यही उर्दू का स्थान है।

सर, मैं एक मिनट प्रार्थना कर अपनी बात खत्म करूंगा। यह बात सही है, माननीय मंत्री जी बिहार से आते हैं, यहां जगन्नाथ मिश्र जी का नाम आया कि 1986 में या 1980 में उन्होंने उर्दू को द्वितीय भाषा के रूप में मान्यता दी, लेकिन उसे जमीन पर मूर्त रूप देने का जो काम है, वह उन्होंने नहीं किया था। नियुक्ति से पहले पद सृजन की आवश्यकता होती है। किसी भी पद पर, चाहे आशुलिपिक का पद हो, शिक्षक का पद हो, दुभाषिए का पद हो, किसी भी पद पर किसी भी व्यक्ति की नियुक्ति तभी होगी, जब वह पद सृजित होगा। यह पद का सृजन कार्य वर्ष 1990 से पहले बिहार में नहीं हुआ था। लालू प्रसाद यादव जी का जब मंत्रिमंडल बना, तो वर्ष 1990 में चाहे शिक्षक के लिए हो, आशुलिपिक के लिए हो या थाने में मुंशी के लिए हो, यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर के लिए हो, टीचर्स के लिए हो, सारे पदों का सृजन किया गया। वहां जितने शिक्षकों की नियुक्ति हुई है सामान्य विद्यालय से लेकर, मदरसा तक और मकतब तक उर्दू के सृजित पदों में से करीब-करीब नियुक्तियां हो गई हैं। फिर भी कुछ पद रह गए थे। हम लोगों ने उन नियुक्तियों की कोशिश की थी। इसलिए जो उन्होंने कहा कि जगन्नाथ मिश्र जी के बाद बिहार में कोई कुछ नहीं हुआ, यह सही नहीं है। वहां विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, हम लोगों ने जो माइनोरिटीज कमीशन की रिकमंडेशन है भाषा के बारे में, बिहार प्रदेश पहला प्रदेश है, जिसने उसे लागू किया और आज भी विधान सभा, विधान परिषद में हमारी जो कार्यवाही होती है, वह उर्दू और हिंदी, दोनों भाषाओं में प्रसारित होती है। बहुत बहुत धन्यवाद।

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभापति जी, इस विषय पर जितने माननीय सदस्य बोले, सबने बहुत अच्छे-अच्छे सुझाव दिए। यहां इतने अच्छे-अच्छे उर्दू बोलने वाले हैं, आधी चीजें तो मुझे समझ में नहीं आई क्योंकि मैं उर्दू इतनी अच्छी तरह से नहीं जानती हूं। तो मैं यह समझती हूं कि इस तरह की डिबेट हो।...(व्यवधान)...

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: आप फिल्मों में तो बहुत अच्छी उर्दू बोलती हैं।

†[مولانا عبیداللہ خان اعظمی : آپ فلموں میں تو بڑی اچھی اردو بولتی ہیں۔]

†Transliteration in Urdu Script.

श्रीमती जया बच्चन: नहीं, मैं हिंदुस्तानी बोलती हूं। न मैं हिंदी बोलती हूं, न उर्दू बोलती हूं, मैं तो हिंदुस्तानी बोलती हूं। मैं यह कह रही थी कि सबने बहुत अच्छे-अच्छे सुझाव दिए। सबने यही कहा कि यह मुसलमानों की ही भाषा नहीं है। मुझे उसका एग्जाम्पल यहां देखने को नहीं मिला। यह बहुत दुख की बात है।

महोदय, मैं सिर्फ एक सुझाव देना चाहती हूं, जो मेरा ओब्जरवेशन है। बच्चे स्कूलों में जाते हैं, वे जिस प्रदेश में पढ़ते हैं जिस स्टेट में पढ़ते हैं, वहां वे या ता इंग्लिश मीडियम से या हिंदी मीडियम से या उस प्रदेश की लैंग्वेज के मीडियम से पढ़ते होंगे, लेकिन वहां उन्हें उसके साथ एक सेकेंड लेंगुवेज भी दी जाती है, जैसे हिंदी मीडियम हो तो संस्कृत देते हैं, जैसे महाराष्ट्र में तो मराठी कंपलसरी होती है। मुझे ऐसा लगता है कि उर्दू बहुत महत्वपूर्ण जुबां है और इसे लेंगुवेजेज के ऑप्शन में कंपलसरली डालना चाहिए, जो कि किसी भी स्कूल के सिलेबस में नहीं है। यह सिर्फ मदरसे में या उर्दू स्पीकिंग स्कूल में नहीं होनी चाहिए, बल्कि हर स्कूल में होनी चाहिए, चाहे वह अंग्रेजी माध्यम का हो या किसी भी प्रदेश की भाषा के माध्यम का हो। मैं ऐसा सोचती हूं कि माननीय मंत्री जी अगर इस ओर ध्यान देंगे और इस पर कार्रवाई करेंगे, तो बहुत अच्छा होगा। बहुत बहुत धन्यवाद।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी): जनाब डिप्टी चेयरमैन साहब, सबसे पहले तो मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं और फिर खासतौर से मोतिउर रहमान साहब का और शाहिद सिद्दीकी साहब का, जिन्होंने इस विषय पर आधे घंटे के डिसकशन के लिए वक्त लिया। मैं समझता हूं कि तकरीबन 13 हमारे माननीय सदस्यों ने, मैम्बर ऑफ पार्लियार्मेंट ने अपनी अपनी बातें यहां रखी हैं। शाहिद सिद्दीकी साहब ने जब बात शुरू की थी, तो मैं समझता हूं कि उन्होंने तकरीबन 15 इस्यूज अपनी बातों के माध्यम से रखने का काम किया था और उसके अलावा भी बहुत सारी सूचनाएं दी थीं। मैं शायद सबका जवाब तो बहुत कम वक्त में नहीं दे पाऊंगा,

लेकिन मैं चाहूंगा कि जो मुख्य, खास-खास सवालात हैं, उनका जवाब मैं जरुर यहां पर दूं। आपने देखा कि जब यहां गुफ्तगू हो रही थी तो कई मरतबा नौंक-झौंक ही नहीं बल्कि तनातनी का मामला आपके सामने आया,दरअसल यह जबान ही लश्करी है और यह पैदा ही इसी तरह से हुई है। अत: जो कुछ यहां देखने को मिला, बहुत अलग नहीं था और मैं समझता हूं कि जिन्होंने भी अपनी बातें रखीं, बहुत अच्छी बातें रखीं। मैं यह कहना चाहता हूं कि उर्दू का मैं भी तालिबे इल्म रहा हूं। जब मैंने अपनी तालीमी जिन्दगी शुरु की तो यदि सबसे पहले मैंने कोई जबान पढी तो वह उर्दू ही पढी और उर्दू भी कोई साल या दो साल नहीं, मैं समझता हूं कि प्री-यूनिवर्सिटी तक मैंने जो भी तालीम हासिल की, वह उर्दू मीडियम से ही की। आज भी जब मैं उन दिनों को याद करता हूं, तो

उस जमाने में न तो किताबों की कमी होती थी, न ही उस्तादों की कमी होती थी और न ही तालिबे इल्मों की कमी होती थी। अब धीरे-धीरे वक्त के साथ शायद उर्दू के चाहने वालों की भी कमी हुई होगी, पढने वालों की भी कमी हुई होगी, लेकिन मैं यह समझता हूं कि आज भी हिन्दुस्तान के अन्दर कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक अगर सामान्य तौर पर कोई एक वहिद जबान है, जो हर जगह समझी जाती है, बोली जाती है और लिखी जाती है, तो वह उर्दू जबान ही होगी। जहां तक यह सवाल पैदा होता है कि इसके फरोग के लिए काम नहीं हो रहा है, तो मैं नहीं समझता हूं कि एक मरतबा यह बोल देना सही होगा कि उर्दू के लिए कुछ भी नहीं हो रहा है या बिहार के अन्दर कुछ भी नहीं हुआ, यह बात बिल्कुल गलत है।

मैं सभी तरफ आपकी तवज्जोह दिलाना चाहूंगा, आपने यहां एन.सी.ई.आर.टी. की बात रखी और कहा कि बिहार के अन्दर किताबें उपलब्ध नहीं हैं या स्कूल में टीचर्स उपलब्ध नहीं हैं, उसके साथ-साथ आपने मदरसों का भी ज़िक्र किया। यदि आंकड़ों में अधिक जाएंगे तो इन सब बातों को बताने में काफी समय लगेगा, लेकिन चूंकि यह बिहार से जुड़ा हुआ सवाल है,तो मैं आपको बता देना चाहता हूं कि बिहार के अन्दर उर्दू ट्रांसलेटर, एसिस्टेंट ट्रांसलेटर एवं उर्दू टाइपिस्ट, ये सब मिला कर तकरीबन 1234 सैंक्शन्ड पोस्ट्स थीं, उसके अन्दर 966 पोस्ट्स पर रिक्रूटमेंट हो चुका है एवं उन पर लोग काम कर रहे हैं। सिर्फ 265 जगह ऐसी हैं जो वेकेन्ट हैं और जैसे ही हमें मौका मिलेगा, इन पर भी रिक्रूटमेंट का काम होगा। इसी तरह से सब इन्स्पैक्टर के बारे में यहां पर कहा गया था कि थानों के अन्दर कोई पदाधिकारी होना चाहिए, तो सब इन्स्पैक्टर के लिए भी बिहार के अन्दर बिहार सरकार के द्वारा तकरीबन 539 पोस्ट क्रिएट की गईं, उसके लिए विज्ञापन भी आया, लेकिन कोर्ट के अन्दर पी.आई.एल. हुआ और उसकी वजह से अब तक यह मामला कोर्ट के अन्दर पैंडिंग रहा।

एक माननीय सदस्य: रोस्टर कूलिंग की वजह से

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी: किसी भी वजह से वह मामला अब तक कोर्ट के अन्दर पैंडिंग रहा है। मदरसों की बात कही गई, तो बिहार के सिलसिले में मैं बता देना चाहता हूं कि बिहार के अन्दर तकरीबन 1119 मदरसे ऐसे हैं, जिनको बिहार मदरसा बोर्ड चलाता है और इन 1119 मदरसों में, जितने भी वहां पर काम करने वाले लोग हैं, चाहे वे उस्ताद हों या कोई और हों, बिहार सरकार अपनी तरफ से उनकी तनख़्वाह और जो उनके इखाजात हैं, उन्हें वहन करती है। जितने भी वहां पर लोग काम करने वाले हैं,उस्ताद हैं, उसको बिहार सरकार अपनी तरफ से अपनी सेलेरी उनके जो सारे इखराजात हैं, बिहार सरकार वहन करती है। उसके अलावा जिसका जिक्र किया गया है तकरीबन ऐसे 2900 मदरसे हैं, जो रजिस्टर्ड हैं, अब उस पर भी आगे की कार्यवाही की गई है, मैं यहां पर बतलाने का काम करूंगा। इसी तरह से यहां पर सवाल रखा गया एन.सी.आर.टी. की किताबों के बारे में, मैं यहां पर सदन के सामने आपसे वायदा करना चाहता हूं जैसा

ओबैदुल्लाह खान आज़मी साहब ने यहां बताया कि जिस तरह से जो लोग किताबें लेने गए थे तथा उनके साथ जो सलूक किया गया था, उसके बारे में हम जानकारी हासिल कर लेंगे और मैं इसके बारे में आपको भी इत्तला दूंगा कि आखिर किन लोगों ने इस तरह की हरकत की। तो उस पर इंशाअल्लाह हम कार्यवाही जरूर करेंगे। यहां पर यह भी मसला उठाया गया कि उर्दू के अंदर एन.सी.ई.आर.टी. की किताबें मौजूद नहीं हैं। बिना शक-व-शुबहा पिछले चार सालों में जब यह यू.पी.ए. सरकार आई उससे चार साल पहले के वक्त को अगर आप ले लें तो उर्दू की किताबें मार्केट से धीरे-धीरे दूर होती चली गई। लेकिन अब जब से यह यू.पी.ए. सरकार आई है तब से हम लोगों ने इस पर बड़ी तेजी से काम किया और मैं आश्वासन देना चाहता हूं और यकीन दिलाना चाहता हूं कि आखिरी तारीख 30.6.05 तक जितनी भी किताबें हैं क्लास एक से लेकर बारहवीं क्लास तक की किताबें मार्केट के अंदर मौजूद होंगी।

तीसरी बात यहां आपने एन.सी.पी.यू.एल. के बारे में कही, नेशनल कौंसिल फॉर प्रोमोशन ऑफ उर्दू लेंग्युएज के बारे में, हमारे साथी एम.पी. साहब ने कहा कि वहां पर न कोई कमेटी है और न कुछ हुआ है मैं उनको बतलाना चाहता हूं कि सारी जगह भर दी गई हैं और आपको जानकर के खुशी होगी कि एन.सी.पी.यू.एल. जैसा कि सोज साहब ने बताया, कुछ लोगों की अलग राय हो सकती है लेकिन एन.सी.पी.यू.एल. सही मायने में बड़े कामों को अंजाम दे रही है। उसके पास पैसे की जो भी तंगी हो, 11 करोड़ रुपया है तथा और रुपया चाहिए वह भी उसके लिए उपलब्ध कराया जा सकता है। लेकिन मैं आपको यहां बतलाना चाहता हूं कि वह सिर्फ कम्प्यूटर सप्लाई नहीं करती है, कम्प्यूटी की तालीम भी देती है, उसके कोर्सेज हैं जो हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ हिस्सों में चलाए जा रहे हैं उर्दू के अंदर। यह बड़ी कामयाबी से चल रहे हैं। ये बिहार के अंदर भी हैं और हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ इलाकों में उसके कोर्सेज चल रहे हैं और बड़ी कामयाबी से चल रहे हैं। अब उसमें अलबत्ता यह बात हो सकती है कि उसमें पैसों की जरूरत हो, मज़ीद पैसे की जरूरत हो उसके और आगे बढ़ाना चाहिए। मैंने एन.सी.पी.यू.एल. को एक बड़ा काम दिया है जब से यह सरकार बनी है और जब से मैं मंत्री हुआ हूं, आज यहां पर बहुत सारे सांसदों ने यह बात उठाने का काम किया कि जब तक रोजगार से जुबान को नहीं जोड़ा जाएगा तब तक यह जुबान तरक्की नहीं कर सकती और यह सच्ची बात है। और यही बड़ी बात है जिसके बारे में पहले नहीं सोचा गया। आज चाहे मौलाना उर्दू यूनिवर्सिटी बनी हो या फिर आज हमने जो एन.सी.पी.यू.एल. के जरिए कम्प्यूटर के जो कोर्सेज चलाए हैं या फिर आगे जो हम लोगों ने प्रोग्राम बनाया है मौलाना आजाद उर्दू यूनिवर्सिटी के साथ और फिर दूसरे इदारों के साथ, हमने इस एन.सी.पी.यू.एल. को एक बहुत बड़ा काम दिया है कि आप एक साल के अंदर जितने भी वोकेशनल ट्रेनिंग के कोर्सेज जो 105-106 के करीब हैं या उससे ज्यादा भी हो सकते हैं। वोकेशनल आईआईटी और पॉलिटेकनिक, इन तीन कोर्सेज का उर्दू तर्जुमा कराकर के, उसको छपवाकर के आप लाइये और हम चाहेंगे कि उर्दू मीडियम के अंदर आईटीआई,

वोकेशनल ट्रेनिंग और पॉलिटेकनिक की पढ़ाई पढ़ाई जाये। इसके साथ-साथ मौलाना आजाद यूनिवर्सिटी से हमारी बात हुई, जब यह सरकार बनकर आई, जब हमारी पहली मीटिंग हुई, जब पूरे मुल्क से हमने लोगों को बुलाया और वहीं हमने रीजनल सेंटर्स खोलने का फैसला किया। कुछ तो पहले रीजनल सेंटर्स खुले हुए थे, लेकिन जब यह सरकार आपकी बनी, तो एक साल के अंदर हमने पांच रीजनल सेंटर्स पूरे हिन्दुस्तान में मौलाना आजाद यूनिवर्सिटी के खोले। उसमें श्रीनगर, भोपाल, मुम्बई, कोलकाता और दरभंगा हैं। ये पांच रीजनल सेंटर्स हमने खोले हैं। इनके अंदर हम लोगों का प्रोग्राम यह है कि जो जनरल बी.ए., एम.ए. की पढ़ाई होगी, वह तो होती रहेगी और होनी चाहिए। लेकिन उसके साथ-साथ इसके जरिए हम बीएड की तालीम, एमएड की तालीम, पॉलिटेकनिक, जर्नलिज्म, इस तरह के जो भी कोर्सेज हैं, जो लोगों को रोजगार दिला सके, टेक्नीकल एजुकेशन या वोकेशनल एजुकेशन का इंतजाम हम मौलाना आजाद यूनिवर्सिटी के जरिए से करने वाले हैं और उस पर हमने कार्यवाही शुरु कर दी है।

मदरसे से बच्चे निकलते हैं, हिन्दुस्तान में हजारों मदरसे हैं, हिन्दुस्तान के मदरसों से बच्चे निकल रहे हैं, अब उनके पास दो ही जगह हो सकती हैं, चाहे वह इमामत करें मस्जिदों के अंदर या मदरसा में दर्स दें, तीसरी तो उनके लिए कोई पढ़ाई नहीं है। इसीलिए हमने कहा है कि हम उर्दू में तरजमा करेंगे और मदरसों को भी ओपन स्कूल सिस्टम से जोड़ेंगे, ताकि वहां पर वोकेशनल तालीम वे लोग डिस्ट्रिक्ट लेवल पर ले सकें। इसीलिए हम एन.सी.पी.यू.एल. से सिलेबस ट्रांसलेट करवा रहे हैं। जब तक इसमें मदरसों से फारिक बच्चों को, मदरसा कोइ एक दो नहीं है, इनकी तादाद हजारों में है और वहां से जो बच्चे निकलेंगे, उनके पास कोई रास्ता नहीं होगा, जब तक कि उर्दू मीडियम में, उनको किताबें उपलब्ध नहीं होंगी, वे आगे की तालीम या ऐसी तालीम जिसके जरिए वे रोजगार तलाश कर सकें, इसके लिए जब तक उर्दू में किताबें नहीं होंगी, वे यह काम नहीं कर पायेंगे।

यहां पर हमारे शाहिद सिद्दिकी साहब ने बात रखी कि मदरसों के सिलसिले में कुछ नहीं हो रहा है, सर्व शिक्षा अभियान में उर्दू के लिए क्या हो रहा है, मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैं कोई एक मर्तबा नहीं, उत्तर प्रदेश तीन मर्तबा गया, मुम्बई तो मैं कई बार जा चुका हूं, बंगलौर गया, हैदराबाद गया, श्रीनगर गया और हर जगह हमने जहां सर्व शिक्षा अभियान की और भी बातें रखीं, वहीं पर मैंने साफ लफ्जों में कहा कि आपके पास जितने भी मदरसें हों, उनको आप सर्व शिक्षा अभियान में जोड़ सकते हैं। कुछ राज्यों की तरफ से तो बहुत अच्छा, मैं समझता हूं कि अफरमेटिव कदम उठाया गया, उस पर अमल भी हुआ और अमल हो रहा है, जैसे मध्य प्रदेश के अंदर तीन हजार मदरसे आज सर्व शिक्षा अभियान से जोड़ दिये गये हैं। कर्णाटक के अंदर भी मदरसों को सर्व शिक्षा अभियान के साथ लेने का सिलसिला शुरु हो गया है। बिहार के 2900 मदरसों की जो बात यहां कही गई, उसको भी सर्वशिक्षा अभियान से जोड़ दिया गया है। मैं मुलायम सिंह यादव जी के पास में गया था, मैंने वहां

मालूम किया कि उत्तर प्रदेश के अंदर कुल कितने मदरसे हैं, मुझे बताया गया कि 16 हजार मदरसे हैं। हमने कहा कि कितनों को आपने सर्व शिक्षा अभियान से जोड़ा है, मुझे बताया गया कि 500 के करीब। हमने कहा कि इन साढ़े पन्द्रह सौ मदरसों का क्या होगा? मैं मुलायम सिंह जी से मिला था, मैंने उनसे गुजारिश की थी कि जो बचे हुए पन्द्रह हजार मदरसे हैं, उनको भी आप सर्व शिक्षा अभियान से जोड़ दीजिए। भारत सरकार का जो हिस्सा होगा, उसको हम पहुंचाने का काम करेंगे। इसी तरह से पूरे हिन्दुस्तान के अंदर जितने मदरसे हों, जितने मकतब हो, जहां पर पहली क्लास से लेकर आठवीं क्लास तक की पढ़ाई होती हो, उनको हम लोग सर्व शिक्षा अभियान से जोड़ने के लिए तैयार हैं। आप जितनी बड़ी फेहरिस्त लाइएगा, उस सबके लिए हम लोग यहां से आपकी मदद करेंगे, उसको हम लोग जोड़ने का काम करेंगे। यही नहीं, उर्दू मीडियम मकतब के बारे में भी वैसे ही हमने कहा है। जिस राज्य के अंदर काम करना है, आगे बढ़ना है, उर्दू को आगे बढ़ाना है- लोग काम कर रहे हैं। मैं आपको बताना चाहता हूं, आपसे शेयर करना चाहता हूं कि कर्णाटक के अंदर चार हजार उर्दू मकतब हैं। कुछ मजीद के लिए उन्होंने यहां पर दर्खास्त भेजी, उसको भी हम लोगों ने, भारत सरकार ने ऐक्सैप्ट किया कि आप खोलिए, हम लोग मदद करेंगे। भारत सरकार यहां मदद करने को तैयार हैं हमारे कॉमन मिनिमम प्रोग्राम में हम लोगों ने सिर्फ कहा ही नहीं है, हम लोग अमल करना चाहते हैं। बहुत अच्छी तजवीज़ सोज साहब की तरफ से आई है कि क्यों नहीं इस बात को प्रधानमंत्री के पास भी रखा जाए? इसके लिए आप सब लोग कॉम्पीटेंट हैं, सब लोग उनसे मिल सकते हैं उनसे बात कर सकते हैं। अगर कहीं पर भी आपको कमी नज़र आती हो तो उनसे मिलकर अपनी अर्जी रख सकते हैं। जहां तक 2004-2005 में उर्दू टीचर्स के बारे में आपने पूछा कि क्या हुआ, पूरे मुल्क के अंदर हमने तकरीबन 3,289 नए टीचर्स दिए हैं। उसमें बिहार के अंदर भी 360 टीचर्स हम लोगों ने सैंक्शन किए हैं-कॉमन मिनिमम प्रोग्राम में उर्दू जब से डाली गई है, उसके बाद। अगर आप स्टेट वाइज़ चाहेंगे तो वह भी हम आपको दस्तेयाब करवा देंगे लेकिन बिहार के लिए 360 नए टीचर्स हमने बहाल किए हैं।

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: मैं आपका एक सैकेंड लेना चाहूंगा। बड़ी अहम सी बात है, आपकी इजाजत से पूछना चाहूंगा। ...(व्यवधान)... चूंकि अब बहस खत्म हो रही है, मैं सिर्फ यह अर्ज करना चाहूंगा कि जो उर्दू मीडियम के स्कूल हैं, उर्दू मीडियम स्कूलों में जो तालीम दी जाती है-एक तो है जुबान की तालीम और एक जो टीचर्स पढ़ा रहे हैं, जैसे वह बच्चा मैथ पढ़ रहा है, वह बच्चा जोग्राफिया पढ़ रहा है, वह बच्चा साइंस पढ़ रहा है-इन बच्चों को जो लोग पढ़ा रहे हैं, क्या वे उर्दू पढ़े-लिखे हुए लोग पढ़ा रहे हैं या वे उर्दू नहीं जानते हैं, हिन्दी में पढ़ा रहे हैं और बच्चे को फालो करना पड़ रहा हैं सर, तालीम की दो नौयत हैं। एक है जुबानी और एक है सबजैक्ट की, जरा वह मुझे बता दीजिए।

†[مولانا عبیداللہ خان اعظمی : سر، میں آپ کا ایک منٹ لینا چاہوں گا۔ بڑی اہم سی بات ہے، میں آپ کی اجازت سے پوچھنا چاہوں گا......مداخلت.......چونکہ اب بحث ختم ہو رہی ہے، اب میں صرف یہ عرض کرنا چاہوں گا کہ اردو میڈیم اسکول ہیں، اردو میڈیم اسکولوں میں جو تعلیم دی جاتی ہے ۔ ایک تو زبان کی تعلیم اور ایک جو ٹیچرس پڑھا رہے ہیں، جیسے وہ بچہ میتھ پڑھ رہا ہے، وہ بچہ جغرافیہ پڑھ رہا ہے، وہ بچہ سائنس پڑھ رہا ہے، ان بچوں کو جو لوگ پڑھا رہے ہیں، کیا وہ اردو پڑھے لکھے ہوئے لوگ پڑھا رہے ہیں یا وہ اردو نہیں جانتے ہیں۔ سر، تعلیم کی دو نوعیت ہیں، ایک ہے زبانی اور ایک ہے سبجیکٹ کی، ذرا وہ مجھے بتا دیجئے۔]

श्री उपसभापति: यह तो डिटेल की बात है।

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी: देखिए, ये डिटेल की बातें हैं, माननीय उपसभापति जी ने ठीक कहा। जहां तक सहुलियत का सवाल पैदा होता है, वे सहुलियतें मौजूद हैं। आज एन.सी.ई.आर.टी. जब किताब तैयार करती है तो वह यह नहीं देखती कि कितने सौ बच्चे स्कूल में इस सबजैक्ट को लेंगे या नहीं लेंगे। हम लोग सिलेबस तैयार करके भेज देते हैं। सी.बी.एस.ई. के अंदर भी आपको इजाजत है कि आप उर्दू में सवाल के जवाबात लिख सकते हैं। ऐसा नहीं कि सिर्फ किसी पर्टीकुलर जुबान में आपको लिखना है। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: मौलाना जी, बहस में मत जाइए, यह डिटेल की बात हैं मदरसे में क्या हो रहा है, स्कूल में क्या हो रहा है, ये सब ...(व्यवधान)...

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी: सर, एक सवाल उस दिन यहां उठाया गया था कि बिहार के अंदर सिर्फ इंग्लिश और हिंदी के अंदर ही सवालात पूछे जाते हैं। मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि बिहार के अंदर कई जुबानों के अदंर जवाब देने का आपको हक है लेकिन जो सवालात किए जाते हैं वे सिर्फ दो जुबानों में होते हैं। आप वहां उड़िया में भी लिख सकते हैं, बंगाली में भी लिख सकते हैं,उर्दू में भी लिख सकते हैं लेकिन सवालात जो होंगे, वे सिर्फ दो जुबानों में होंगे-अंग्रेजी और हिन्दी ...(व्यवधान)... सिविल सर्विसिज़ में नहीं। आपने जो ख्वाहिश दायर की है, उसको हम लोग भेजेंगे। उस पर देखेंगे, क्या मन मुताबिक हो, वह हम आपको बताएंगे।

श्री मंगनी लाल मंडल: लोक सेवा आयोग में ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: देखिए, अब बीच में मत बोलिए। ...(व्यवधान)... आप दूसरों को जवाब भेज दीजिए।

†Transliteration in Urdu Script

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी: सर यही नहीं, जितनी भी सैंट्रल यूनिवर्सिटीज़ हैं सभी यूनिवर्सिटीज के अंदर उर्दू डिपार्टमैंट्स हैं, वहां पर उर्दू की तालीम होती है। सर, इसके अतिरिक्त मैं यह भी बतलाना चाहता हूं कि हमें पूरे हिन्दुस्तान में साढ़े सात सौ कस्तूरबा गांधी रेजिडेंशियल स्कूल बनाने हैं। चाहे माइनोरिटीज की आबादी कह लें, या उर्दू पढ़ने-लिखने वालों की आबादी कह लीजिए, हम लोगों ने उनमें से, पूरे मुल्क में से 110 ब्लाक्स चुने हैं। हमारी यह जिम्मेदारी होगी कि वहां पर लड़कियों को उर्दू की तालीम दी जाए। हमें उसमें लोकल लेवल पर भी काम करने की जरूरत है। मैं समझता हूं कि मैंने ज्यादातर सवालों को कवर कर दिया हैं मैं तो यहां पर केवल एक ही बात कहना चाहता हूं कि पूरे मुल्क के अंदर उर्दू के बारे में सभी की एक ही राय है कि उर्दू एक खूबसूरत जुबान है। इसकी तरक्की होनी चाहिए। लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जो लोग बहुत अच्छी उर्दू बोलते हैं और अच्छी उर्दू समझते भी हैं, अच्छी उर्दू लिखते भी हैं, लेकिन पता नहीं कैसे उनके जहन में यह बात आई, यहां पर जो माननीय सदस्य बैठे हैं, मैं उनके बारे में नहीं कह रहा हूं, लेकिन ऐसा देखा गया है कि कभी किसी ने किसी तरह की टिप्पणी की और कभी कुछ बोल दिया। मुझे याद है कि जब हम अलीगढ़ में तालिबे इल्म थे, तो उस जमाने में किसी ने कहा कि ये ईरान की जुबान है, किसी ने कहा कि यह तुर्की की जुबान है और वे खुद बहुत अच्छी उर्दू जुबान बोला करते थे, वे हिन्दुस्तान के बहुत बड़े लीडर थे। मैं यहां उनका नाम नहीं लूंगा। उस जमाने में एक शायर ने बहुत अच्छा शेर कहा था। यहां पर सभी ने कोई न कोई शेर कहा है तो मैं भी कहना चाहता हूं। उर्दू के साथ सभी हमदर्दी रखते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि हो सकता है वह दिखोवटी ज्यादा होता हो। जब यह बात उस जमाने में कही गई थी, किसी ने कहा था कि ईरान की जुबान है, किसी ने कह दिया कि तुर्की की जुबान है, तो एक शायर ने उस जमाने में बहुत अच्छा शेर कहा था और फिर बाद में कहा कि मैं उर्दू को आगे बढ़ाना चाहता हूं, उर्दू के लिए कुछ करना चाहता हूं उन्होंने कहा था,

'काटकर जुबां मेरी, कह रहा है वह जालिम,

अब तुम्हें इजाजत है, हाले दिल सुनाने की।'

मैं समझता हूं कि हम लोगों से उर्दू के लिए जो कुछ भी हो पाएगा, चाहे वह मदरसे के जरिए से हो, चाहे वह उर्दू टीचर्स को नई जगह देने के संबंध में हो या फिर एन.सी.पी.यू.एल. को आगे बढ़ाने की बात हो, हम लोग अभी नवम्बर, दिसम्बर में हिन्दुस्तान की तरफ से लाहौर में एक बहुत बड़ा उर्दू फेयर लगाने वाले हैं, ताकि वहां से भी हम कुछ सीखें इसके साथ ही हम पाकिस्तान के अंदर लोगों को यह भी बताएं कि हिन्दुस्तान में उर्दू में क्या कुछ हो रहा है। इसलिए हम उर्दू के लिए वह सब कुछ करेंगे जिसकी उर्दू को जरूरत होगी। आप लोगों को कहीं पर कोई कमी नहीं होगी।

श्री उपसभापति: मंत्री जी, मैं आखिर में आपको एक सुझाव देना चाहता हूं कि उर्दू या किसी दूसरी लेंग्वेज के लिए, हिन्दुस्तान में हमारी जो भी एजुकेशन की पॉलिसी है, जो बुनियादी तालीम हैं, हमें उसको मदर टंग में देना चाहिए, यही हमारी पॉलिसी है। आप यह सर्वे करवा लें कि इस मुल्क में उर्दू बोलने वाले कितने बचे हैं? हिन्दुस्तान की आबादी के 11 परसेंट बच्चे प्राइमरी एजुकेशन में जाते हैं। अगर उर्दू बोलने वालों की आबादी आठ करोड़ है, नौ करोड़ है या दस करोड़ है तो उन 11 परसेंट बच्चों को मातृ जुबान में प्राइमरी एजुकेशन देना, हुकूमत का फर्ज है। अगर हमारी ब्यूरोक्रेसी इसको समझ ले और इस दिशा में काम करें, तो 11 परसेंट बच्चों के लिए कितने मदरसे होंगे? मान लो इस मुल्क में दस करोड़ उर्दू बोलने वाले हैं तो इसका मतलब है कि 25 मिलियन बच्चों को प्राइमरी स्कूल में तालीम दिलानी होगी और उनको बुनियादी तालीम उर्दू में देनी होगी।

हिंदी में दें, तमिल में दें, जिन-जिन की मादरी जबान है, उसमें दें। इसके लिए हुकूमत का यह फर्ज होता है कि वह उतने मदरसे फराहम करे। इसलिए पहले सर्वे करा लीजिए कि जबान के हिसाब से, मादरे जबान में कितने मदरसे खोलने हैं। इसके लिए सर्व शिक्षा अभियान में तवज्जोह देंगे तभी उर्दू की, हर जबान की खिदमत हो सकती है।

The House is adjourned till 11.00 AM tomorrow.

The House then adjourned at thirty minutes past eight of the clock till eleven of the clock on Thursday, the 12th May, 2005.

MGIPMRND—1477RS—18-10--2005